चन्दामामा
अक्तूबर १९९२
4
Rs.

गति सीमा
गति बढ़ाओ, २ लैक्टो किंग प्रति मिनट खाओ.
एक दिशा मार्ग
एक ही दिशा स्वाद भरी, दिशा लैक्टो किंग की!
हरी बत्ती
साफ रास्ता, चलते जाओ, लैक्टो किंग खाते जाओ!
आगे मिठाई की दुकान
लैक्टो किंग से जेब भरना ना भूलना.
बम्प से टकराओ
उछलो और १ लैक्टो किंग मुह मे टपकाओ!
कोई शोर नहीं
न चबाओ, सिर्फ चूसो मौज उड़ाओ.
चले चलो पैरीज़ लैक्टो किंग की डगर पर
इतना स्वाद कि एक से मन ना भरे
Lacto King

डायमण्ड कॉमिक्स का

दीवाली धमाका

मुफ्त ग्रीटिंग कार्ड

प्रत्येक कॉमिक्स के साथ

कहीं स्टॉक खत्म न हो जाये

सितम्बर में प्रकाशित प्रत्येक 'डायमण्ड कामिक्स' के साथ एक ग्रीटिंग कार्ड मुफ्त अलग-अलग डिजाईन में

डायमण्ड कॉमिक्स प्रा. लि. 2715, दरियागंज नई दिल्ली-110002

महत्वाकांक्षी विद्यार्थियों और उत्साही पुस्तक प्रेमियों के लिए केनरा बैंक की प्रेरणादायक योजनायें

शिक्षा के माध्यम से ज्ञान या पठन के माध्यम से ज्ञानोद्दीपन

केनरा बैंक की दो अनोखी एवं प्रगतिशील योजनाओं के माध्यम से ये दोनों आसानी से हासिल किये जा सकते हैं।

VIDYA SĀGAR

विद्या सागर: उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करने के इच्छुक प्रथम श्रेणी के विद्यार्थियों के लिए ऋण योजना। यह ऋण स्कूल/कालेज की फीज़, छात्रावास शुल्क, पाठ्य पुस्तकें, वर्दी से लेकर विदेशों में उच्चतर शिक्षा तक के सभी पहलुओं को प्रावरित करती है। ये ऋण विद्यार्थियों पूर्व/उत्तर स्नातकों और तकनीकी विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध हैं।

ज्ञान गंगा: तरह-तरह के उपन्यास, व्यापार पुस्तिकायें, व्यावसायिक पुस्तिकायें, एनसाइक्लोपीडिया... वैसे, पाठ्य पुस्तकों को छोड़कर कोई भी पुस्तक अधिग्रहीत करने का सुगम मार्ग ढूँढनेवाले किसी भी व्यक्ति के लिए कम से कम एक साल जो केनरा बैंक का खातेदार रहा हो उसे 1000 रु. से लेकर 5000 रु. तक का ऋण उपलब्ध होगा।

JNANA GANGA

इस असामान्य अवसर का फायदा उठायें। अपने विचार धारा को विस्तृत करके ज्ञानरूपी क्षितिज को बढ़ायें। केनरा बैंक आपकी पूरी मदद करता है।

प्रगतिशील और नवोन्मेषकारी केनरा बैंक ने 1991-92 के दौरान असरदार कार्यनिष्पादन दर्ज किया। इन आंकडों पर एक नज़र डालें।

स्वायत्त निधियाँ	–	रु. 779 करोड़
प्रारक्षितियाँ	–	रु. 665 करोड़
निवल लाभ	–	रु. 157 करोड़
लाभांश दर	–	22%
जमाराशियाँ	–	रु. 14238 करोड़
अग्रिम	–	रु. 8000 करोड़
जमा खातों की संख्या	–	22.6 मिलियन

केनरा बैंक

(भारत सरकार का उपक्रम)

प्रधान कार्यालय, जे.सी. रोड, बेंगलूर-560 002

हमेशा एक कदम आगे और हमेशा आपके साथ

R K SWAMY/BBDO CB 6027 HIN

MAGGI CLUBBERS
FUN LOVERS
MAGGI
CLUB

NOW
INTRODUCES
the
CRAYON COLLECTION
My Little Darling
Mr. Clean
With Every Pocket
FREE
2 Erasers
PERFUMED CRAYONS
PLAYONS
CRAYONS YOU CAN PLAY WITH
HEY KIDS
THE DOUBLE A COMPANY
JOIN THE DOTS & COLOUR THE PICTURE WITH Mr. Clean CRAYONS AND WIN FABULOUS GIFTS. Fill in your name & mail it to the address mentioned below.
NAME:______ AGE:____ ADDRESS:______
EXPORT ENQUIRIES SOLICITED
Mr. Clean
FUN TIME INC. 502. NIRANJAN BLDG., 99 MARINE DRIVE, BOMBAY-2 PH-310258, 317186
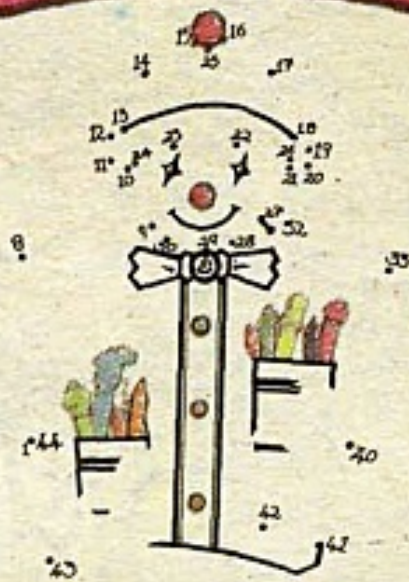
चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

ये युद्ध क्यों चलते रहते हैं?

"किसी प्रकार का भी वध स्तुतीय नहीं, विशेषकर उस व्यक्ति के लिए जिसके मन में प्रेम है । ऐसे व्यक्ति को वध करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी । वह वध करेगा ही नहीं ।" ये सारगर्भित शब्द और किसी के नहीं, महात्मा गांधी के हैं, जिन्होंने आज से ७५ वर्ष पहले एक अंगरेज़ महिला को लिये अपने एक पत्र में कहे थे । उस अंगरेज़ महिला ने ईस्थर मेनन नाम के एक भारतीय से शादी की थी ।

पहला विश्व युद्ध चल ही रहा था । तब तक गांधी जी (मोहन दास करंचंद गांधी) दक्षिणी अफ्रीका से चल पड़े थे । दक्षिणी अफ्रीका में उन्हेंने श्वेत साम्राज्यवाद के खिलाफ़ भारतीय मूल के लोगों का नेतृत्व किया था । अब वह गुजरात में वापस आ गये थे, और यहां रहकर वह सोच रहे थे कि कैसे राष्ट्र का नेतृत्व किया जाये और कैसे भारत में अंगरेज़ों का दमनकारी और निरंकुश शासन ख़त्म किया जाये ।

गांधी जी ने एक सांप का उदाहरण देते हुए कहा, "अगर किसी के मन में सांप के लिए दया आ जाये तो वह इससे डरेगा नहीं और न ही वह इसे मारेगा, और सांप भी उसे नुक़सान नहीं पहुंचायेगा । हमें, दरअसल ऐसी ही सादगी की स्थिति तक पहंचना होगा । मुझे लगता है कि राष्ट्रों के लिए यहां तक पहुंचना संभव नहीं । मुझे यह भी लगता है कि हर तरफ एक समान उन्नति नहीं हो सकती । इसलिए राष्ट्र हमेशा आपस में लड़ते रहेंगे । जो राष्ट्र सच्चाई पर है, उसे अपने आत्मिक बल से लड़ना होगा ।"

गांधी जी के ये शब्द कितने सच हो गये । अमीर और गरीब राष्ट्रों के बीच एवं अमीर और गरीब लोगों के बीच बहुत बड़ा अंतर हो गया है । इस लिए विश्व को दूसरा महायुद्ध भी भुगतना पड़ा । इसके अलावा और भी कई छोटे-छोटे युद्ध होते रहे । ये युद्ध अब भी चल रहे हैं ।

दो अक्तूबर को हम गांधी जयंती मनाने जा रहे हैं । आओ, इस अवसर पर हम गांधी जी का स्मरण करें, और प्रार्थना करें कि राष्ट्र केवल अपने आत्मिक बल के आधार पर ही युद्ध करेंगे ।

वर्ष : ४५ अक्तूबर १९९२ अंक : २
एक प्रति : रु. ४/- वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

आओ जश्न मनाएं, गीत कैम्पको के गाएं!

"यह दूधभरी, यह क्रीमभरी, यह स्वादभरे सपनों से भरी.

यह मेरी मनभाती चॉकलेट. कैम्पको क्रीमी मिल्क चॉकलेट!"
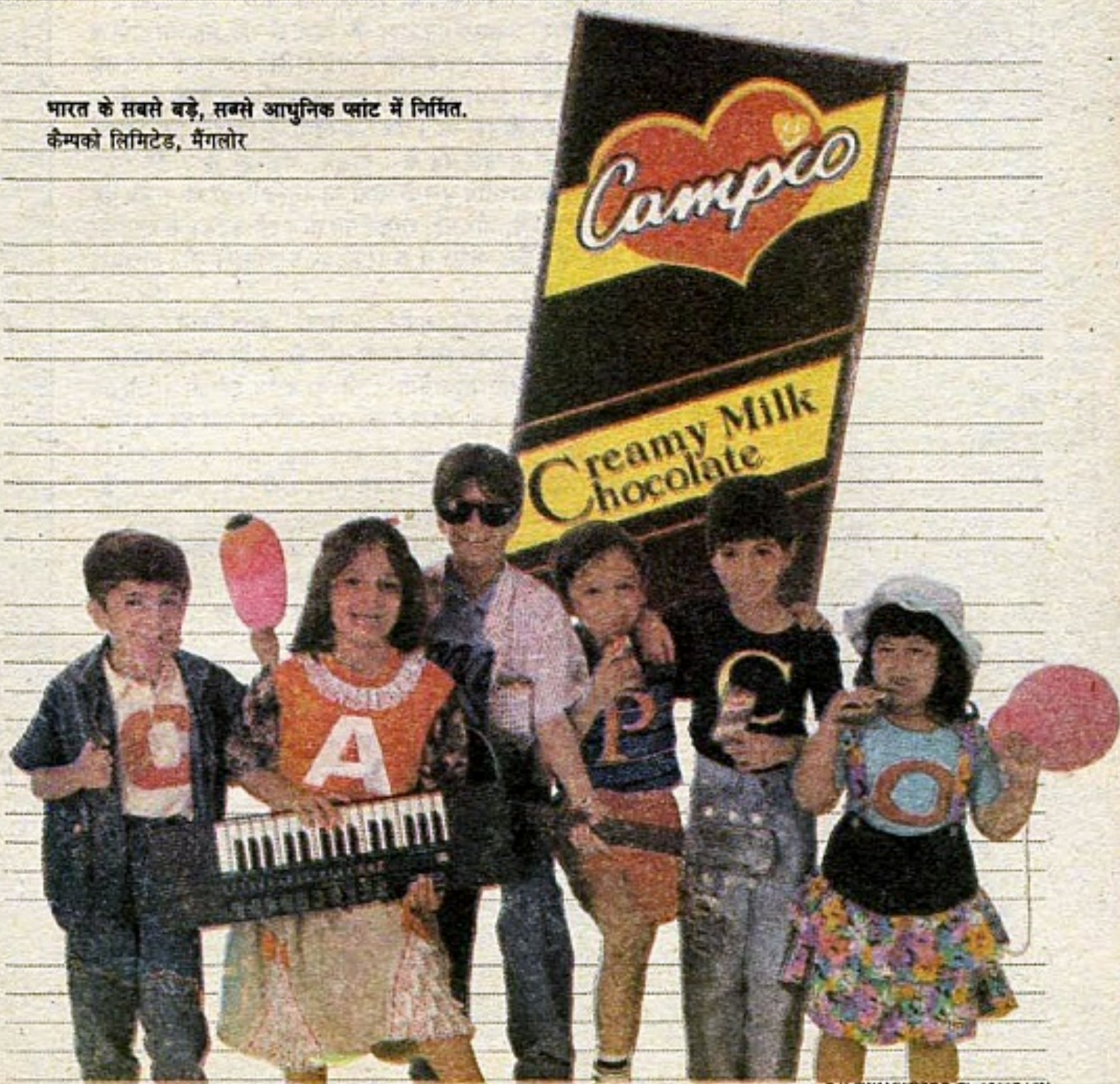
भारत के नये राष्ट्रपति
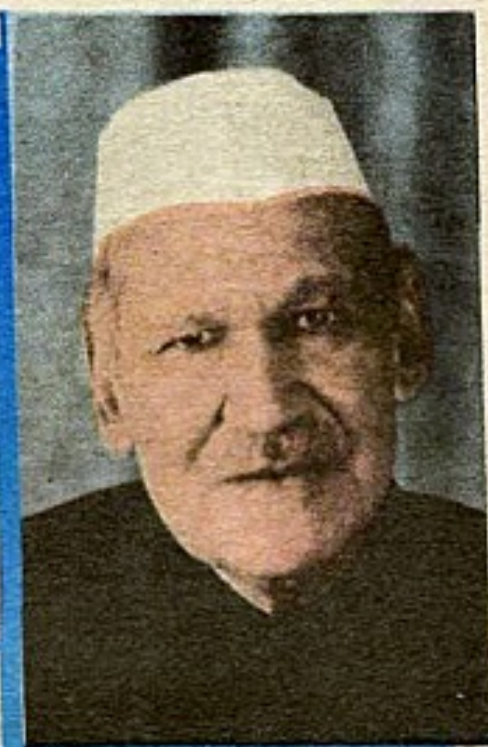
२५ जुलाई को डॉ. शंकर दयाल शर्मा ने नवें राष्ट्रपति का पदभार संभाला। अब तक वह भारत के उप-राष्ट्रपति थे। देश के इस सर्वोच्च पद पर वह पांच वर्ष तक बने रहेंगे।

राष्ट्रपति का चुनाव संसद के दोनों सदनों के सदस्य एवं सभी विधान सभाओं के सदस्य करते हैं। यह चुनाव निर्विरोध नहीं हो सका। यदि ऐसा हो पाता तो यह उनके लिए और अधिक सम्मानजनक होता। विरोधी दलों ने सत्ताधारी कांग्रेस दल से अनुरोध किया कि वे सब मिलकर एक ही उम्मीदवार चुनें। लेकिन जब कभी बातचीत की नौबत आयी तो किसी भी एक उम्मीदवार पर रज़ामंदी नहीं हो सकी। परिणाम यह हुआ कि पूरी तैयारी के साथ चुनाव करवाना पड़ा। कांग्रेस-दल ने जो उम्मीदवार खडा किया था, उसके पीछे दूसरे दलों का समर्थन कुछ इस प्रकार का था कि चुनाव एक औपचारिकता रह गया था, और सब जानते थे कि डॉ. शर्मा बड़ी आसानी से चुनाव जीत जायेंगे। हुआ भी ऐसा ही। उनके विरोध में प्रो. जी. जी. स्वेल थे। उनके मुकाबले डा. शर्मा को बहुमत मिला। प्रोफेसर स्वेल भी अपनी तरह के विशिष्ट व्यक्ति हैं। उनकी एक योग्यता और भी है—वह पिछड़ी जाति के हैं। विपक्ष ऐसे

ही किसी व्यक्ति को इस पद पर बैठाना चाहता था ।

डॉ. शंकर दयाल शर्मा का जन्म १९१८ में भोपाल में हुआ । अंगरेज़ी में एम. ए. करके उन्होंने १९३९ में कैंब्रिज विश्वविद्यालय से कानून में उपाधि प्राप्त की । बाद में वह लखनऊ विश्वविद्यालय में विधि-विभाग में प्राध्यापक बने । दो साल के बाद वह वापस कैंब्रिज चले गये । वहां वह विधि पढ़ाते रहे, और साथ-साथ उन्होंने संवैधानिक विधि में डॉक्टरेट की उपाधि भी प्राप्त की । वह लंदन में बैरिस्टर के रूप में भी काम करते रहे ।

भारत लौटकर उन्होंने स्वतंत्र रूप से वकालत करनी शुरू की, लेकिन जल्दी ही राजनीति ने उन्हें अपनी ओर खींच लिया और वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गये । सब से पहले वह भोपाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बने और इसके बाद १९५२ से १९५६ तक भोपाल राज्य के मुख्यमंत्री बने रहे । बाद में भोपाल राज्य बृहत्तर मध्यप्रदेश में शामिल हो गया । लेकिन राजनीति डॉ. शर्मा के लिए नयी नहीं थी, क्योंकि उन्होंने "भारत छोड़ो आंदोलन" में सक्रिय योग दिया था और कई बार जेल भी जा चुके थे ।

भोपाल से डॉ. शर्मा देश की राजधानी में चले आये । यहां पहले वह कांग्रेस कार्यकारिणी समिति में सदस्य बने और बाद में इसके महासचिव । १९७१ में वह लोकसभा में आ गये और इंदिरा गांधी के मंत्रिमंडल में संचार मंत्री बनाये गये । १९८० में वह फिर चुनाव जीतकर लोकसभा के सदस्य बने, लेकिन १९८४ में वह चुनाव में खड़े नहीं हुए, बल्कि एकमत से उप-राष्ट्रपति और राज्य सभा के अध्यक्ष चुन लिये गये । इन पदों पर बने रहते हुए उन्होंने निष्पक्षता के लिए काफी ख्याति अर्जित की ।

डॉ. शंकर दयाल शर्मा मुख्यतया एक पढ़ने-लिखने वाले व्यक्ति हैं । इन्होंने कई पुस्तकों की रचना की है, और एक वक्त कुछ महत्वपूर्ण पत्रिकाओं का-संपादन भी करते रहे । इन्हें खेलों में बहुत रुचि है और यह संगीत के भी प्रेमी हैं । यह डॉ. सर्वेपल्ली राधाकृष्णन और डॉ. जाकिर हुसैन जैसे विद्वान राष्ट्रपतियों की परंपरा में हैं और आम तौर पर इन्हें ऐसा नेता माना जाता है जिस पर लोग भारतीय जनतंत्र की आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए निर्भर कर सकते हैं ।

शपथ-ग्रहण समारोह के बाद डॉ. शर्मा ने ईश्वर से प्रार्थना की कि वह उन्हें "अपना कर्तव्य और ज़िम्मेदारियां उचित ढंग से पूरी करने के लिए आशिस् दे ताकि यह संसार बेहतर हो सके और सब के लिए और अच्छा भविष्य हो सके ।"

चंदामामा भारत के प्रथम नागरिक का अभिनंदन करता है और उसके लिए अर्थपूर्ण जीवन की कामना करता है ।
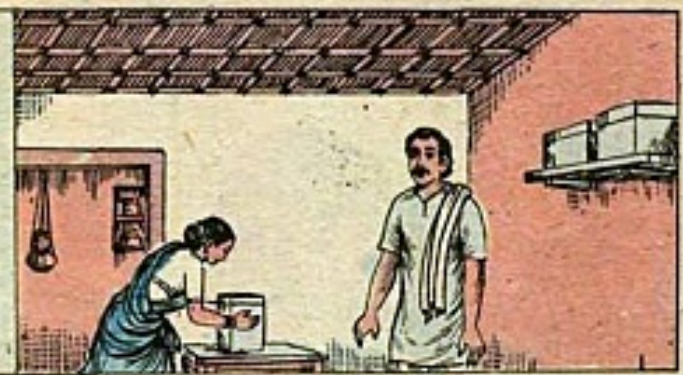
बात ऐसे बनी

जगदलपुर नाम के गांव में एक गरीब किसान रहता था। उसका नाम शिवराज था, और उसकी पत्नी का नाम पार्वती बाई था। जयदेव उनका एकमात्र पुत्र था। शिवराज चाहता था कि जयदेव को अच्छी से अच्छी शिक्षा मिले।

जयदेव पढ़ाई में काफी होशियार था। पंद्रह साल की उम्र तक पहुंचते-पहुंचते उसने गांव की पाठशाला की पढ़ाई पूरी कर ली। ऊंची शिक्षा के लिए उसका शहर जाना ज़रूरी था।

शिवराज ने अपने खेत का कुछ हिस्सा गिरवी रखकर कुछ रकम उधार ली और अपने बेटे को शिक्षा ग्रहण करने के लिए शहर भेज दिया। इस बीच दोनों, पति-पत्नी, को काफी कष्ट उठाने पड़े, लेकिन उन्होंने अपने बेटे की पढ़ाई में कोई रुकावट नहीं आने दी।

इसी तरह चार साल बीत गये और जयदेव ने अपनी वह शिक्षा भी पूरी कर ली। अब वह किसी अच्छी नौकरी की तलाश में था। इसी तलाश के दौरान उसका परिचय धनराज नाम के एक धनवान व्यक्ति से हुआ। धनराज के एक ही बेटी थी। वह चाहता था कि उसे कोई ऐसा लड़का मिले जो पढ़ा-लिखा तो हो ही, साथ में बुद्धिमान-विनम्र भी हो। वह ऐसे लड़के से अपनी बेटी की शादी करके उसे घरजमाई बनाना चाहता था।

एक दिन धनराज ने जयदेव को अपने घर भोजन के लिए आमंत्रित किया। उसी समय जयदेव ने धनराज की बेटी दीपिका को देखा। जयदेव को वह भा गयी।

भोजन हो चुकने के बाद धनराज ने जयदेव से कहा, "देखो बेटा, मेरे एक ही बेटी है। मेरे लिए सब कुछ यही है। ईश्वर की कृपा

निर्मला त्रिपाठी
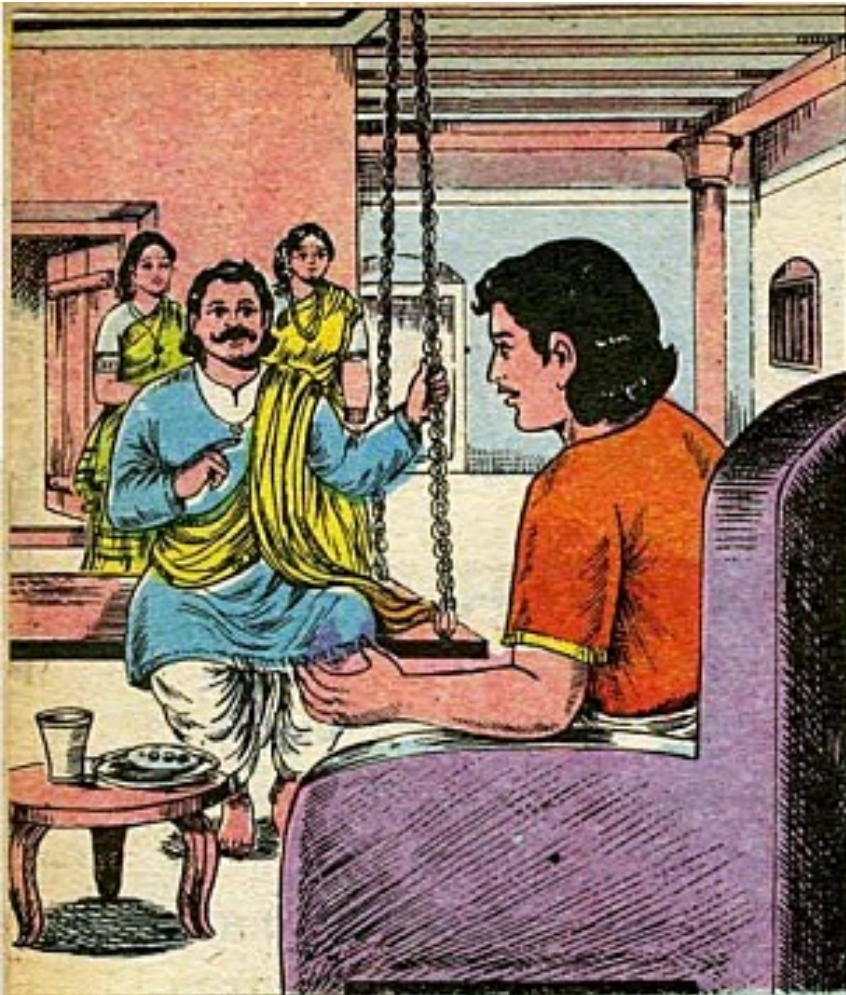
से मैंने लाखों रुपये कमाये हैं। मैं उसका किसी योग्य और सुशिक्षित युवक से विवाह करना चाहता हूं। अगर तुम हां कह दो तो मैं तुम्हें अपना दामाद बना लूंगा।"

धनराज की बात सुनकर जयदेव को कुछ हैरानी हुई। उसने बस इतना ही कहा, "आप अमीर हैं, और मैं एक गरीब बाप का बेटा हूं। मेरे पास कुछ नहं है।"

जयदेव का उत्तर पाकर धनराज को थोड़ी हंसी आ गयी। वह बोला, "इन तमाम बातों का तो मैंने पहले ही पता लगा लिया था। ये बातें इस रिश्ते में बाधा नहीं बन सकतीं। हां, केवल एक बात पर तुम्हें विचार करना होगा-तुम्हें मेरे यहां घरजमाई बनकर रहना होगा।"

"घरजमाई। क्षमा कीजिए, यह नहीं होगा। मेरे मां-बाप ने इतने कष्ट उठाकर मुझे पढ़ाया है। मेरा यह फर्ज़ बनता है कि सबसे पहले मैं उन्हें अब ज़्यादा से ज़्यादा सुख दूं।" जयदेव ने उत्तर दिया।

"मैं तुम्हारी बात समझ रहा हूं। साथ तुम्हारे मां-बाप भी यहीं हमारे साथ रह सकते हैं।" धनराज ने कहा।

जयदेव कोई निर्णय न ले सका। अब धनराज ने स्थिति को समझा। उसने कहा, "मैं खुद ही तुम्हारे मां-बाप से बात कर लूंगा। अगर तुम्हारे मां-बाप मेरा प्रस्ताव मान लें तो क्या तुम्हें भी यह प्रस्ताव मंजूर होगा?"

जयदेव ने स्वीकारात्मक सर हिला दिया। इसके बाद दोनों जयदेव के गांव के लिए निकल पड़े। धनराज ने जयदेव के माता-पिता से भेंट की और उनसे कहा, "आप लोग तंगी में थे। आपने फिर भी कड़ी मेहनत करके अपने बेटे को पढ़ाया-लिखाया। यह बड़े गर्व की बात है। आपके बेटे को मैं दामाद बनाना चाहता हूं। लेकिन उसके मन में घरज़माई बनने के बारे में कुछ संदेह है। कृपा करके आप ही उसे समझायें।"

धनराज की बात सुनकर जयदेव के माता-पिता ने कहा, "बेटा, हम बूढ़े हैं। हमारे लिए तुम अपना भविष्य क्यों खराब करते हो, इनकी बेटी से विवाह करना तुम्हारे लिए हर लिहाज से हितकर होगा।"

आखिर जयदेव विवाह के लिए राजी हो गया। विवाह हो जाने के बाद शिवराज और उसकी पत्नी भी अपने बेटे के साथ शहर में रह सकते हैं, यह बात भी धनराज ने उन्हें बता दी। पति-पत्नी धनराज के इस सुझाव पर बहुत खुश थे।

दीपिका और जयदेव का विवाह हो गया। विवाह हुए भी एक महीना बीत चुका था। तब धनराज ने एक दिन जयदेव से कहा, "बेटा, हमारे बहुत कहने पर भी तुम्हारे माता-पिता यहां आने के लिए रज़ामंद नहीं हुए। मैं उन्हें यह पांच हज़ार की रकम भिजवाना चाहता हूं।" फिर उसने एक नौकर को बुलवाया और उसे रुपये सौंपते हुए बोला, "यह रकम तुम मेरे समधी को सौंप आओ।"

अपने ससुर की इस उदारता पर जयदेव को बहुत खुशी हुई।

एक दिन जयदेव का बचपन का एक दोस्त सुधाम उनके यहां आया। उस समय धनराज घर पर नहीं था। वह बोला, "कुछ भी हो, गांव में हर कोई यही कहता दिखाई देता है कि तुमने घरजमाई बनकर अपने मां-बाप के बारे में सोचना बंद कर दिया है। यह बात वाकई मुझे बहुत अखरती है।"

दोस्त के मुंह से ऐसी बात सुनकर जयदेव को बड़ा दुःख हुआ। बोला, "मैं एक बार गांव आना चाहता हूं। कुछ महीने पहले मेरे ससुर ने पिताजी के लिए अपने नौकर के हाथ पांच हजार रुपये भिजवाये थे। क्या इससे मेरे ससुर की उदारता का पता नहीं चलता?"

"पांच हजार रुपये?" सुधाम एकदम से चौंका, फिर बोला, "ताज्जुब। इतनी बड़ी रकम मिली हो और तुम्हारे पिता मुझसे इसके बारे में बात तक न करें। मुझे यकीन नहीं होता। दाल में ज़रूर कुछ काला है।"

फिर सुधाम वहां से चला गया। वह जब चला गया तो जयदेव और दीपिका ने उस नौकर को बुलवाया जिसके हाथ रुपये भेजे गये थे, और उससे पूछताछ की।

नौकर ने तब बताया कि जो रकम मालिक ने जयदेव के सामने अपने समधी को दे देने के लिए उसे सौंपी थी, वह उसने कुछ ही
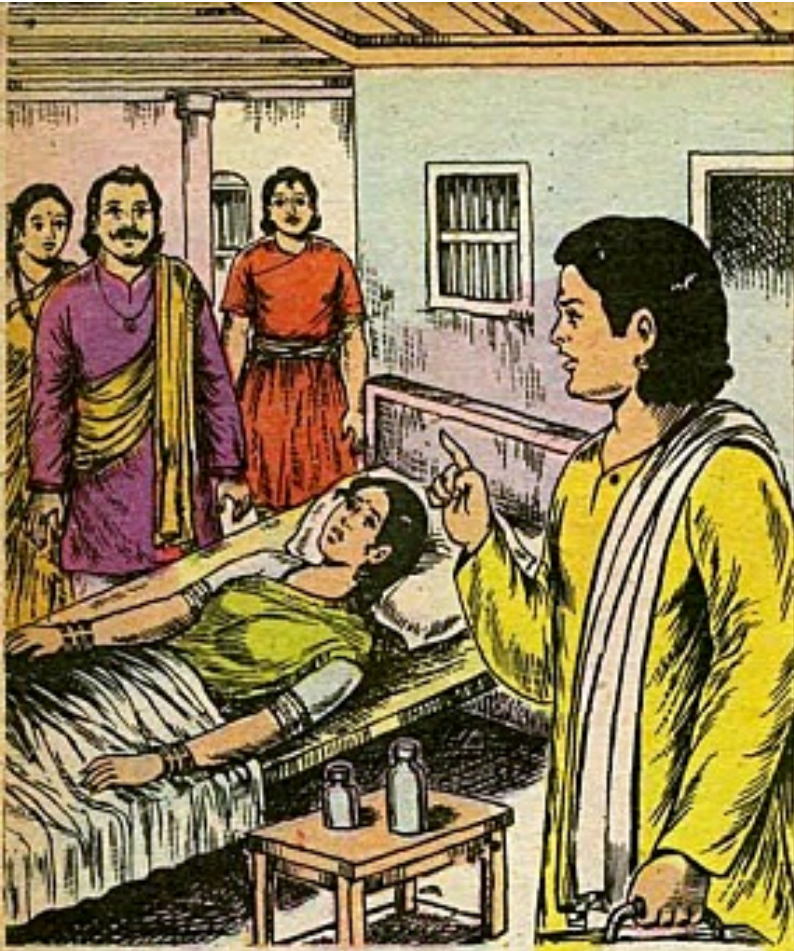
देर बाद वापस ले ली थी ।

सच्चाई अब सामने आ गयी थी । इससे धनराज की पोल खुल गयी थी और उसके स्वभाव का पता चल गया था ।

इस सब का पता चलने पर दीपिका बहुत दुःखी हुई । वह अपने पति से बोली, "पैसे के मामले में मेरे पिता जी बहुत ही कंजूस हैं । इसलिए आप स्वयं ही बतायें कि हमें क्या करना चाहिए जिससे मेरे पिता के स्वभाव में परिवर्तन हो ।"

इसके अगले ही दिन दीपिका के हाथ-पांव ऐंठ गये और उसके लिए खाट पर से उठना भी मुश्किल हो गया । और तो और, उसके लिए बोलना भी मुश्किल हो गया ।

धनराज ने वैद्य को बुलवाया, वैद्य ने कुछ दवाइयां दीं । एक हफ्ते तक इलाज चलता रहा । फिर भी कोई लाभ नहीं हुआ । दीपिका की हालत पहले जैसी ही बनी रही ।

बेटी की इस हालत पर धनराज काफी परेशान था । तब जयदेव ने उससे कहा, "लगता है इस वैद्य से कुछ नहीं बन पड़ेगा । हमारे गांव में सुधाकर नाम का एक बहुत बड़ा वैद्य है । मेरी राय में अब हमें उसी से इलाज करवाना चाहिए । हम उसे यहीं बुलवाये लेते हैं ।"

धनराज ने इस के लिए अपनी स्वीकृति दे दी । जयदेव ने सुधाम के नाम एक पत्र लिखा । पत्र में हर बात सविस्तार कही गयी थी । फिर उसने अपने एक विश्वास प्राप्त नौकर को बुलवाया और उसके हाथ सुधाम को वह पत्र भिजवा दिया ।

सुधाम आया । उसने दीपिका की जांच की और उसे कोई दवा देकर धनराज से बोला, "यह रोग केवल दवा से ठीक नहीं होगा । आपकी बेटी के लिए जलवायु का बदलना बहुत ज़रूरी है । इसे आप इसके ससुराल के गांव में भेज दीजिए । मैं भी उसी गांव में रहता हूं । वहां की खुली हवा और झरने के ताज़ा पानी से इसकी तबीयत एकदम सुधर जायेगी । इलाज तो साथ-साथ चलता ही रहेगा ।"

धनराज को यह प्रस्ताव पसंद नहीं आया । पर वह मजबूर था । उसे इसके लिए अपनी स्वीकृति देनी ही पड़ी । उसे अभी अपने शहर में कुछ ज़रूरी काम निपटाने थे । इसलिए उसने जयदेव के साथ ही दीपिका

को भेज दिया । जयदेव और दीपिका जब गांव पहुंचे तो उन्हें देखकर शिवराज और पार्वती बाई बेहद खुश हुए । दीपिका अपने सास-ससुर का असीम स्नेह पाकर विभोर हो उठी । उसे पहली बार अनुभव हुआ कि इतने समय तक अपने सास-ससुर से दूर रहकर उसने क्या कुछ खोया है ।

एक सप्ताह बाद जब दीपिका को देखने उसका पिता वहां आया तो वह अपनी बेटी के चेहरे की बदली हुई रंगत देखकर बहुत खुश हुआ । बेटी ने बाप को बताया कि ससुराल में वह बहुत ही सुख से है और सास-ससुर से उसे जो स्नेह मिला है, उसकी वह कल्पना भी नहीं कर सकती थी । अपनी बात पूरी करने के लिए उसने कहा, "पिताजी, आपको धन-दौलत की कोई कमी नहीं । आप घरजमाई क्यों चाहते हैं? छोड़ दीजिए शहर का वह शोर-शराब, और आ जाइए आप भी यहां मां के साथ इसी गांव में । बड़े आराम से कटेंगे आपके दिन ।"

बेटी के इस सुझाव से धनराज को बडी हैरानी हुई । बोला, "बेटी, मैं यह समझ गया हूं कि तुम्हारे सास-ससुर तुम्हें अपनी खुद की जाई बेटी से भी बढ़कर लाड़-प्यार देते हैं । तुम बड़ी भाग्यशाली हो । तुम शहर में पलकर बड़ी हुई थी । इसलिए मुझे लगा कि तुम शायद गांव में सुख-संतोष से नहीं रह पाओगी । इसी लिए मैंने तुम्हारे पति को घर जमाई बनाने के लिए ज़िद की थी । लेकिन मैं जो बात अब तुमसे कह रहा हूं अपने पति से मत कहना । उसे पता चलेगा तो दुःख होगा ।"

पर दीपिका तो बात को मोड़ देना चाहती थी । उसने कहा, "पिताजी, आपने यह तो बताया ही नहीं कि आप यहां आकर हमारे साथ रहने के लिए तैयार हैं या नहीं?"

बेटी की बात सुनकर धनराज हंस पड़ा । बोला "इसमें अब संदेह की गुंजाइश ही कहां है? हम यहीं एक घर बनवा लेंगे और अपने जीवन के बाकी दिन यहीं चैन से बितायेंगे ।"

जब जयदेव को दीपिका से पता चला कि उसके सास-ससुर भी अब गांव में ही रहेंगे तो वह खुशी से उछल पड़ा ।

पड़दादा

जयसिंह एक सेवानिवृत्त सैनिक था । उसने तमाम उम्र राजा की सेना में सेवारत रहकर बितायी थी । सेवानिवृत्त होकर अब वह अपने गांव में आराम से ज़िंदगी बसर करना चाहता था । एक बार वह राजधानी में पहुंचा । वहां वह पुरानी वस्तुएं बेचने वाली एक दुकान में कुछ वस्तुएं देखने लगा ।

दुकान में उसे एक तैलचित्र देखने को मिला । वह किसी अधेड़ उम्र व्यक्ति का था जिसकी मूंछें ऐंठी हुई थीं और वह तलवार-ढाल थामे खड़ा था । जयसिंह को वह चित्र बड़ा अच्छा लगा ।

दुकानदार ने जयसिंह की उस चित्र में रुचि देखकर कहा, "महोदय, यह चित्र आज से पांच-छह सौ वर्ष पहले के एक वीर योद्धा का है । इसका नाम तो मुझे मालूम नहीं, लेकिन इसके बारे में कहा जाता है कि जब तक यह कम-से-कम एक सौ एक शत्रुओं का वध नहीं कर लेता था, अपनी तलवार को म्यान में नहीं रखता था । आपका इसके प्रति लगाव देखकर मैं आपको यह केवल दो हजार रुपये में देने को तैयार हूं । आप इसे ले जाइए । हां, मेहरबानी करके मोल-भाव मत कीजिएगा ।"

जयसिंह अपने साथ जो रकम लाया था, उसे उसने एक बार गिन कर देखा । उसके पास एक सौ रुपये की कमी थी । इसलिए बिना वह चित्र खरीदे वह दुकान से बाहर आ गया और वापस अपने गांव को चला आया ।

एक महीने बाद वह अपनी ही तरह के एक सेवानिवृत्त सैनिक के यहां पहुंचा । उस सैनिक का नाम खड्गसिंह था । उसे खड्गसिंह के यहां एक दीवार पर टंगा वही तैलचित्र दिखाई दिया जो उसने उस शहर वाली दुकान में देखा था । उसे देखकर जयसिंह को अचंभा हुआ ।

जयसिंह को इस तरह अचंभे में पड़ा देख खड्गसिंह ने कहा, "चौंको मत, यह मेरे पड़दादा है । रुद्रपुरी के युद्ध में इन्होंने शत्रुओं को गाजर-मूली की तरह काटा था और वीरगति पायी थी ।"

इस पर जयसिंह ने लंबी सांस ली और बोला, "काश, मेरे पास एक सौ रुपये उस दिन कम न पड़ गये होते, वरना यह मेरे पड़दादा होते!"

—राधा जगदीश

जादुई महल

[६]

(युवरानी विद्यावती को सारस सरोवर वाले महल से जादुई महल में लाया गया। वहां उसकी हर ज़रूरत पूरी की जाती है, लेकिन उसे बात करने की कोई आज़ादी नहीं है, यहां तक कि वह अपनी परिचारिकाओं से बात नहीं कर सकती। समय-समय पर उसे ऐसे संकेत मिल रहे हैं कि उसे चौकस रहना चाहिए।—उससे आगे)

राजकुमारी थकी हुई तो थी, लेकिन उसे फौरन नींद नहीं आयी। उसे एक बार फिर वह सब याद हो आया जो उसके जगने के बाद घटित हुआ था। उस पर ऐसी चाल चली किसने होगी? क्या वह उसके पिता का कोई दुश्मन है?

लेकिन जहां तक वह जानती थी, राजा वीरसेन का शासन एक अर्से से बड़े शांतिपर्ण ढंग से चल रहा था और सभी पड़ोसी देशों के वीरगिरि से मैत्रीपूर्ण संबंध थे। जो भी हो, वह यह नहीं चाहती थी कि उसके पिता का किसी प्रकार अनिष्ट हो। यदि सब कुछ ठीक-ठाक रहा तो वह शीघ्र ही उसे किसी-न-किसी तरह बचा लेगा। उसने निर्णय लिया कि वह बिलकुल शात रहेगी और उस जादुई महल से, जैसा कि उसे स्त्री ने बताया था, भागने की कतई कोशिश नहीं करेगी, हालांकि दूसरे पक्ष भी उसके सामने

थे, और अगले कुछ ही दिनों में उसके सामने परिणाम आ जाने वाले थे ।

जब सुबह हुई तो विद्यावती को यह पता नहीं चला कि वह स्त्री वहीं पर थी । उसे दरवाज़ा खुलने का पता भी नहीं चला था । वह तभी जगी जब किसी ने उसे कंधों से हिलाया । कमरे में काफी धूप आ चुकी थी, जिसका मतलब था कि दिन काफी चढ़ गया है । "मुझे उम्मीद है कि तुम्हें अच्छी नींद आयी होगी ।" वृद्ध स्त्री ने कहा । लगा जैसे उसे अपने मतलब से ही मतलब है ।

"हां," विद्यावती ने सीधे-सीधे उत्तर दिया । वह भी बात को लंबा नहीं करना चाहती थी । "मेरा ख्याल है मुझे फौरन नहा लेना चाहिए," उसने थोड़ा और स्पष्ट करते हुए कहा । दरअसल, उस समय वह चाह रही थी कि वह एकांत में अपने विचारों को व्यवस्थित करे ।

स्नानागार में उसने देखा कि उसके लिए वे सब वस्त्र बड़े करीने से रखे हुए हैं जिनकी उसे ज़रूरत हो सकती थी । जब वह बाहर आयी तो उसे यह देखकर और भी हरानी हुई कि एक-सी वेशभूषा में दो परिचारिकाएं उसकी प्रतीक्षा में हैं । उसी समय उसने देखा कि उसका कक्ष फर्श से लेकर छत तक आइनों से भरा हुआ है । दीवारों पर और कुछ नहीं था । हां, वहां दो बड़ी-बड़ी खिड़कियां थीं जिनमें से बाहर का उद्यान साफ दीख रहा था ।

उनमें से एक परिचारिका विद्यावती के लिए खाना ले आयी । विद्यावती ने उसे चुपचाप खा लिया । खाना खा चुकने के बाद वह फर बिस्तर पर लेट गयी । इसके लिए उसे किसी को कहना नहीं पड़ा । परिचारिकाएं अब बारी-बारी से उसके कक्ष में ठहरी रहीं । विद्यावती ने अपनी आंखें दिखावे के लिए ही बंद रखीं, वरना वह एकदम चौकस थी, क्योंकि किसी समय कुछ भी घट सकता था ।

फिर एकाएक वृद्ध स्त्री उसके कमरे में दाखिल हुई और बोली, "चलो राजकुमारी, तुम्हें बाग में थोड़ा घुमा लाऊं ।"

विद्यावती फौरन उठी और उस के साथ बाहर चली गयी । जिस समय वे गलियारे में से होती हुई सीढ़ीयां उतर रही थीं,

को वापस महल में ले आया गया । जाने कैसे उसे लगा कि उसे उसके शयन-कक्ष से आगे ले जाया जा रहा है ।

वृद्ध स्त्री ने एक दरवाज़े को धक्का दिया और विद्यावती को भीतर ले गयी । यह कमरा भी ठीक वैसा ही था जिसमें उसने पहले कुछ समय बिताया था । लेकिन आंख झपकते ही राजकुमारी ने यह भी जान लिया कि इस कमरे में कुछ ऐसी चीज़ें हैं जो उस कमरे में नहीं थीं । हो सकता है परिचारिकाओं ने उन्हें बदल दिया हो, उस ने सोचा ।

जब परिचारिकाए उसका रात का खाना लेकर आयीं तो विद्यावती ने चाहा कि वह उनसे उन वस्तुओं के बारे में कुछ पूछताछ करे, लेकिन वह जानबूझकर अपने को रोके रही, क्योंकि वह यह ज़ाहिर नहीं करना चाहती थी कि उसने उन परिवर्तनों पर ध्यान दिया है ।

अगली सुबह जब विद्यावती जगी और उसने खिड़की में से बाहर देखा तो उसके संदेहों की पुष्टि हो गयी । अब उसके सामने उद्यान का दूसरा हिस्सा था । यहां फूल और पौधे दूसरी तरह के थे । वह समझ गयी कि वह अब दूसरे कमरे में है । फिर वह स्नानागर में गयी, और वहां उसे वस्त्र उसी साफ-सुधरे ढंग से रखे हुए मिले जिसकी वह आदी थी ।

जब वह स्नानागार से बाहर आयी तो वहां उसे सुबह की तरह ही दो परिचारिकाएं

विद्यावती ने ग़ौर किया कि हर जगह बड़े सजावटी ढंग से आइनों का इस्तेमाल हुआ है । दीवार पर कोई जगह ऐसी नहीं थी जहाँ आईना नहीं था । वे अलग-अलग शक्ल और आकार के थे । जिस समय वे वहां से गुज़र रही थीं, उनके प्रतिबिंब उनमें झलक रहे थे ।

बाग में घूमना विद्यावती को बहुत अच्छा लगा । वह उससे तरोताज़ा हो गयी । कमला भी कुछ देर तक उसके साथ-साथ चलती रही । लेकिन बाद में वह एक जगह बैठ गयी । पर उसकी आंख बराबर विद्यावती पर लगी रही । उसे डर था कि विद्यावती कहीं भाग न जाये ।

अभी अंधेरा भी नहीं हुआ था कि विद्यावती

उसकी प्रतीक्षा में खड़ी मिलीं । उनका नाम उसे सुरेखा और सुलेखा बताया गया । वे दोनों वैसी ही पोशाक पहने हुए थीं जैसी कि उसने स्वयं पहन रखी थी । विद्यावती को इससे हरानी नहीं हुई । दोनों ही न केवल जुड़वां दिखती थीं, बल्कि विद्यावती से बहुत मिलती थीं । शीघ्र वृद्ध स्त्री वहां से हट गयी और वे दोनों परिचारिकाएं ही वहां रह गयी । जाने से पहले उस स्त्री ने उन्हें ज़रूरी हिदायतें दे दी थीं ।

विद्यावती इंतज़ार करती रही, जब तक कि एक परिचारिका वहां से चली नहीं गयी ।

"सुरेखा, मैं तुमसे कुछ पूछना चाहती हूं ।" उसने उस परिचारिका को संबोधित करते हुए कहा ।

"मेरा नाम सुलेखा है, राजकुमारी," परचािरिका ने उत्तर दिया । "क्या मैं आपको कुछ पीने को दूं, या कछ और चाहिए?"

"नहीं, मुझे पीने को और कुछ नहीं चाहिए, क्या तुम्हें यहां रहते अरसा हो गया है?" राजकुमारी ने प्रश्न किया जो ज़ाहिरा तौर पर बहुत सीधा-सादा था । लेकिन वह लड़की के चेहरे की प्रतिक्रिया को ग़ौर से देखती रही ।

"नहीं, राजकुमारी, ज़्यादा लंबे अरसे से तो नहीं," सुलेखा ने उत्तर दिया । "यही कोई महीना, डेढ़ महीना हुआ होगा ।"

"इससे पहले तुम कहां थी?" विद्यावती ने प्रश्न किया ।

"घर पर ही थी, राजकुमारी," परिचारिका ने उत्तर दिया ।

"मुझे तुम बहुत अच्छा लग रही हो । जब मैं अपने महल में लौटूंगी तो क्या तुम मेरे साथ चलना चाहोगी?" राजकुमारी ने अपना प्रश्न बहुत ही सावधानी से किया ।

"यही आपका महल है, राजकुमारी," उस परिचारिका ने उत्तर दिया । "जब तक मालिक चाहेंगे, आपको यहीं रहना होगा । बाद में वह आपको अपने साथ ले जा सकते हैं । लेकिन मैं नही कह सकती कि कब, और कहां ।"

"ओह, तो ये बात है!" विद्यावती ने बात वहीं खत्म कर दी, क्योंकि वह चाहती थी कि सुलेखा उसके प्रश्नों से इतनी उद्वेलित हो उठे कि वह वृद्ध स्त्री को जाकर सब कुछ

बता दे ।

सौभग्यवश परिचारिकाओं को अगली दोपहरी तक आपस में बातचीत करने का अवसर नहीं मिला । दोपहर के भोजन के बाद उनमें से एक वहीं उसी कमरे में रह गयी । इस बीच राजकुमारी एक झपकी लेने के लिए अपने बिस्तर पर लेट गयी । अब उसका अनुमान था कि यह जो परिचारिका उसके पास है वह सुरेखा है, लेकिन वह ठीक से नहीं कह सकती थी । वह फौरन नहीं सोयी,बल्कि उसने आराम करने के लिए अपनी पीठ के पीछे तकिये रख लिये और उन्हीं के सहारे लेटी रही । इससे यही आभास होता था कि वह अभी सोना नहीं चाहती ।

जब उसे लगा कि वह परिचारिका कोई खास काम नहीं कर रही है तो उसने उससे पूछ लिया, "सुलेखा, यहां आकार मेरे पास बैठो । मैं तुमसे कुछ पूछना चाहती हूं ।" विद्यावती ने जानबूझकर उसे गलत नाम से पुकारा था ।

"राजकुमारी, मेरा नाम सुरेखा है," उस परिचारिका ने कहा, वह राजकुमारी के प्रश्न की राह देखने लगी ।

"तुम दोनों की शक्ल आपस में इतनी मिलती है कि तुम्हारे नामों के बारे में सहज ही भ्रम हो जाता है ।" राजकुमारी ने अपने शब्द तोलते हुए कहा । "अगर मैं ग़लती नहीं कर रही तो तुम दोनों जुड़वां हो ।"

"नहीं राजकुमारी, हम जुड़वां नहीं हैं," सुरेखा ने उत्तर दिया, "हम तो बहनें भी नहीं हैं ।"

"तुम कब से यहां पर हो?" राजकुमारी ने सीधे प्रश्न किया ।

"हो सकता है एक महीना या दो महीने ।" परिचारिका ने उत्तर दिया ।

"लगता है तुम दोनों यहां बिलकुल अकेली रहती हो । इतना बड़ा महल है । सिर्फ वृद्ध स्त्री ही यहां दिखती है ।" विद्यावती ने अपनी बात को बड़े ढंग से रखा । उसे उम्मीद थी कि उसे जो उत्तर मिलेगा, वह काफी काम का होगा ।

"कल माला और नीला काम पर थीं । आज हम यहां काम पर हैं । मैं नहीं कह सकती कल कौन होगा, और फिर परसों कौन होगा..." सुरेखा ने अपनी बात स्पष्ट ढंग

से कही, "यहां कई लड़कियां हैं। मैं समझती हूं कि मैंने उन सब को अब तक नहीं देखा, और न ही मैं उन सब का नाम जानती हूं।"

"यहां आदमी नहीं हैं? तुम्हारे मालिक?" राजकुमारी ने यों ही एक प्रश्न किया।

"अरे, आदमी। मैंने तो यहां कोई देखा नहीं," परिचारिका ने उत्तर दिया। "जहां तक मैं जानती हूं, उनका कक्ष अलग है, और वे महिला कक्ष में नहीं आते। मालिक तो कभी-कभार ही यहां होते हैं। मैंने तो उन्हें एक बार भी नहीं देखा। राजकुमारी, अब आपको आराम करना चाहिए।" सुरेखा ने विद्यावती के तकियों को थोड़ा नीचे किया और फिर उस पर एक रेशमी चादर ओढ़ दी, स्वयं एक खिड़की के पास जा बैठी।

जब तक विद्यावती जगी, वृद्ध स्त्री उसे उद्यान में ले जाने के लिए तैयार थी। राजकुमारी को हैरानी हो रही थी कि वृद्ध स्त्री उद्यान में स्वयं ही क्यों उसके साथ-साथ रहती है, और क्यों नहीं वह उन परिचारिकाओं में से किसी एक को उसके साथ रहने देती। दूसरे, वह बड़ी होशियारी से उससे बात करने से बचती थी। बस, रोजमर्रा की जरूरतों की बात ही उनके बीच हो पाती थी।

अंधेरा होने पर जब वे महल में लौटी तो राजकुमारी को यह समझते देर न लगी कि अब उसे तीसरे कमरे में ले जाया जा रहा है। अगली सुबह परिचारिकाओं का नाम मालिनी और शालिनी बताया गया। उन्हें देखकर विद्यावती को अपनी परिचारिकाओं की याद आ गयी। मालिनी और शालिनी को भी वैसे ही कपड़े पहनाये गये थे जैसे कि उसके पहनने के लिए रखे गये थे। राजकुमारी ने अनुमान लगाया कि जिसने भी उसका अपहरण करवाया है, उसने इस बात का खास ख्याल रखा है कि कोई उसे आसानी से पहचान न सके।

उसी क्षण उसने फ़ैसला किया कि जैसे हालात होंगे, वह उन्हीं के अनुसार अपनी चाल चलेगी। (जारी)

दूर के ढोल

लछमन सेठ की पंसारी की दुकान थी । उसे किसी ने विश्वास दिलाया कि यदि वह मोहनपुर के घाट को छोड़कर पूर्वी द्वीप में चला जाये तो वहां उसका व्यापार खूब पनपेगा, और वह लाखों-करोड़ों कमा सकता है । लेकिन लछमन सेठ की पत्नी तथा उसके माता-पिता का कहना था कि दूर के ढोल सुहावने होते हैं, और जो व्यापार करना जानता है वह कहीं भी रहकर अच्छी-खासी कमाई कर सकता है । उसे इधर-उधर भटकने की ज़रूरत नहीं होती ।

लेकिन लछमन सेठ ने उनकी बात सुनकर भी उसे अनसुना कर दिया । वह पूर्वी द्वीप को जाने की तैयारी करने लगा ।

इसी बीच उसका एक रिश्तेदार, जो पैसा कमाने के लिए उसी पूर्वी-द्वीप में गया था, एकाएक वहां से वापस चला आया और लछमन सेठ के यहां आकर ही ठहरा ।

लछमन सेठ ने उससे पूछा, "सुना है कि पूर्वी द्वीप में हीरे-मोती हाट में ढेरियां लगाकर बेचे जाते हैं । क्या यह सच है?"

इस पर उस रिश्तेदार ने खीझकर कहा, "किसने बताया तुम्हें? यह सब सरासर झूठ है । वहां तो मोती होते ही नहीं । मैंने भी ऐसा ही सुना था, और इसे सच मानकर वहां गया था । मैं अपने साथ संगमरमर के कुछ बाट ले गया था । किसी ने उन्हें गोलकुंडा के रत्न समझकर चुरा लिया । तभी मुझे पता चला कि हमारे देश का कोई भी पत्थर उनके लिए रत्न होता है ।"

अपने रिश्तेदार की बात सुनकर लछमन सेठ को विश्वास हो गया कि वाकई दूर के ढोल सुहावने होते हैं, और दूर के पहाड़ चिकने होते हैं । इसके साथ ही उसने अपने मन से पूर्वी द्वीप में जाने का विचार निकाल बाहर फेंका ।

—शारदा प्रसाद
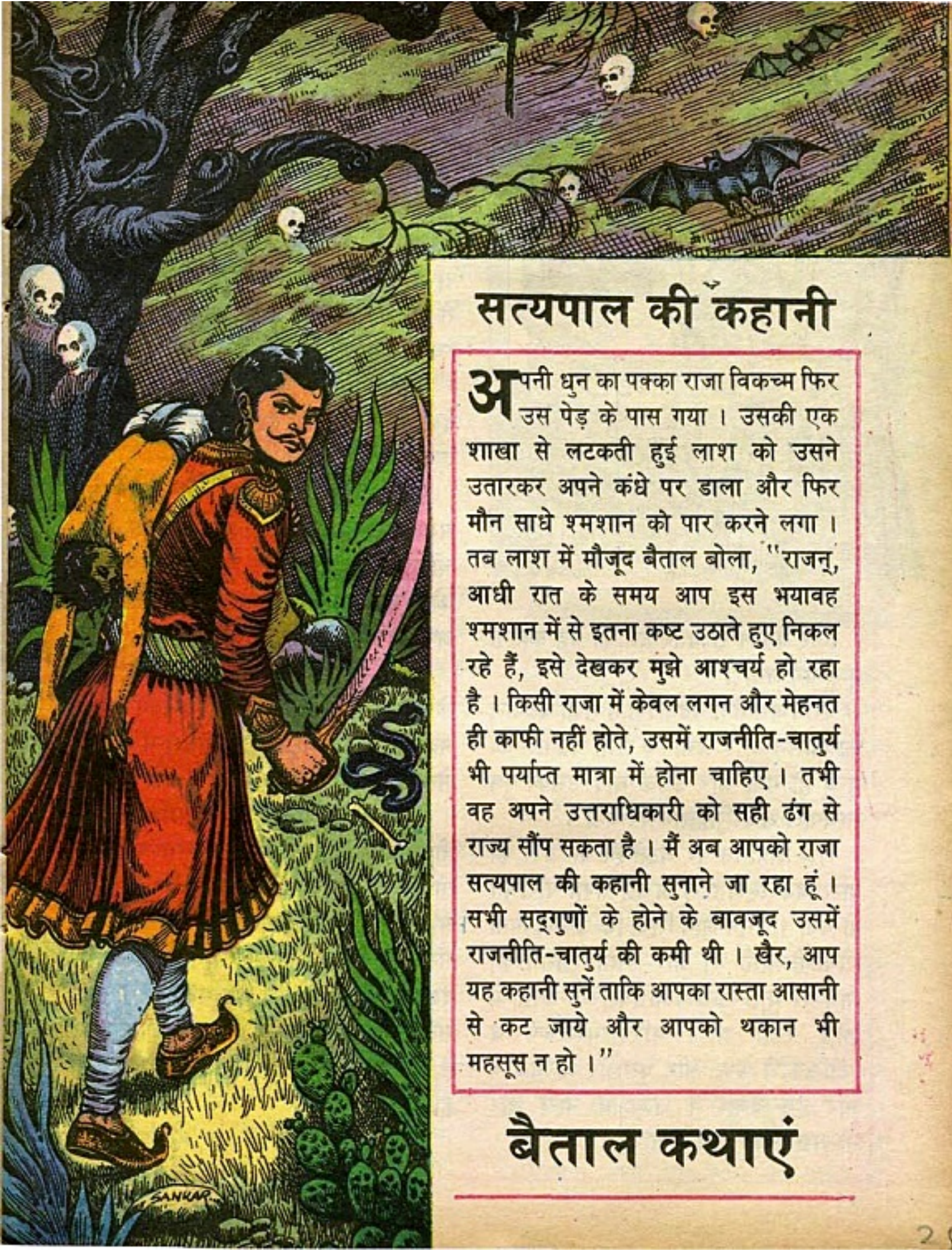
सत्यपाल की कहानी

अपनी धुन का पक्का राजा विक्रम्म फिर उस पेड़ के पास गया। उसकी एक शाखा से लटकती हुई लाश को उसने उतारकर अपने कंधे पर डाला और फिर मौन साधे श्मशान को पार करने लगा। तब लाश में मौजूद बैताल बोला, "राजन्, आधी रात के समय आप इस भयावह श्मशान में से इतना कष्ट उठाते हुए निकल रहे हैं, इसे देखकर मुझे आश्चर्य हो रहा है। किसी राजा में केवल लगन और मेहनत ही काफी नहीं होते, उसमें राजनीति-चातुर्य भी पर्याप्त मात्रा में होना चाहिए। तभी वह अपने उत्तराधिकारी को सही ढंग से राज्य सौंप सकता है। मैं अब आपको राजा सत्यपाल की कहानी सुनाने जा रहा हूं। सभी सद्गुणों के होने के बावजूद उसमें राजनीति-चातुर्य की कमी थी। खैर, आप यह कहानी सुनें ताकि आपका रास्ता आसानी से कट जाये और आपको थकान भी महसूस न हो।"

बैताल कथाएं

फिर बैताल राजा विक्रम को वह कहानी यूं सुनाने लगा ।

पुराने ज़माने में चंदन देश में राजा चंद्रपाल का शासन था । अचानक राजा चंद्रपाल की मृत्यु हो गयी और उसके बाद उसका पुत्र सत्यपाल राज-सिंहासन पर बैठा ।

राज सिंहासन पर बैठते ही वह देश की वास्तविक स्थिति से अच्छी तरह परिचित हो गया । उसने जान लिया कि उसका पिता भोगी-विलासी था और उसने शासन की बागडोर कुछ ऊंचे पदाधिकारियों के हाथों छोड़ रखी थी । परिणामस्वरूप वे पदाधिकारी भ्रष्ट और घूसखोर हो गये थे और इस वजह से राज्य में चारों ओर धोखाधड़ी का बोलबाला था ।

यदि देश की भीतरी स्थिति का यह हाल था तो बाहरी देशों के साथ भी चंदन देश के संबंध कोई अच्छे न थे । चंदन देश के पूर्व में उससे लगा भीलों का देश था । कई पीढ़ियों से वह देश चंदन देश का सामंत राज्य रहा था । सत्यपाल को अपने गुप्तचरों से खबर मिली कि भीलों का राजा जयसेन स्वतंत्र होने की फ़िराक में है ।

पूर्वदिशा में ही भील देश से लगा मिहिर देश था । मिहिर देश प्रचंडवर्मा नामक एक राजा के अधीन था ।

प्रचंडवर्मा चंदन देश की आंतरिक समस्याओं से फ़यदा उठाकर उसे हड़प लेना चाहता था । यह खबर भी राजा सत्यपाल को , जैसे ही वह सिंहासन पर बैठा था, अपने गुप्तचरों से मिली थी ।

इतनी ढेर सारी समस्याओं से घिरे होने के कारण राजा सत्यपाल ने एक दिन अपने महामंत्री केवल भट्ट से इस संबंध में मंत्रणा लेने की कोशिश की ।

"राजन, हमें पहले बाहरी समस्याओं से ही निपटना होगा । आंतरिक समस्याओं से तो बाद में भी निपटा जा सकता है । बाहरी समस्याएं काफी खतरनाक हैं और वे समस्याएं ऐसे ही बनी रहेंगी तो हमें अपने देश से भी हाथ धोने पड़ सकते हैं । इन सब से तुरंत निपटने के लिए एक ही रास्ता है," मंत्री केवल भट्ट ने अपनी मंत्रणा देते हुए कहा ।

"वह क्या है?" राजा सत्यपाल ने

कौतूहलवश पूछा ।

"राजन्, मिहिराधीश की एक ही बेटी है । यदि आप उससे विवाह कर लें तो सारी समस्याएं अपने आप हल हो जायेंगी । इससे हमारी शक्ति में काफी वृद्धि होगी और भील देश का राजा आज़ाद होने की कोशिश करने का साहस भी नहीं करेगा । दूसरे, अगर ज़रूरत पड़ी तो भील देश पर आक्रमण भी किया जा सकता है । तब हम उस राज्य को अपने राज्य में मिला लेंगे ।" महामंत्री केवल भट्ट ने अपनी बात का सिलसिला जारी रखते हुए कहा ।

केवल भट्ट के सुझाव पर राजा सत्यपाल को बड़ा आश्चर्य हुआ । उसने कहा, "महामंत्री, जो तुम कह रहे हो, वह कैसे संभव हो सकता है? अगर राजा प्रचंडवर्मा के मन में किसी प्रकार के रिश्ते का कोई विचार होता, तो वह हमारे साथ युद्ध करने की बात सोच ही नहीं सकता था ।"

महामंत्री केवल भट्ट थोड़ी देर के लिए चुप रहा । फिर बोला, "आप ठीक कहते हैं—राजा प्रचंडवर्मा के मन में हम से रिश्ता कायम करने का कोई विचार नहीं है, लेकिन हमारे गुप्तचरों ने इस बात पर ज़ोर देकर कहा है कि युवरानी मधूलिका आपकी रानी बनना चाहती है । बस, हमें अपने गुप्तचरों द्वारा मधूलिका तक यह खबर भिजवा देनी चाहिए कि आप भी उसे अपनी रानी बनाना चाहते हैं । आप से खबर पाकर बाकी व्यवस्था युवरानी स्वयं कर लेगी ।"

महामंत्री की बात सुनकर राजा सत्यपाल पहले तो चुप रहा, फिर थोड़ा मुसकराते हुए बोला, "जिन गुप्तचरों ने आपको मधूलिका के बारे में यह सब कुछ बतलाया है, क्या उन्होंने उसके अहंकार के बारे में आप से कुछ नहीं कहा?"

राजा के प्रश्न से महामंत्री थोड़ा सकपकाया, फिर कहने लगा, "प्रभु, आप जो कहते हैं, वह सत्य है । लेकिन युवरानी अभी नादान है । वह कमउम्र है । बहुत जल्द वह सुधर जायेगी ।"

अपने महामंत्री की बात का राजा सत्यपाल ने कोई उत्तर नहीं दिया, बल्कि उसे तुरंत विदा कर दिया । पर इससे राजा की समस्याएँ खत्म नहीं हुईं । वह भीतर ही

भीतर बहुत विचलित रहा, और उसी विचलित अवस्था में वह कांचनगिरि की तलहटी में रहने वाले अपने गुरु के आश्रम की ओर अकेला ही निकल पड़ा ।

राजा उस आश्रम से कुछ ही दूरी पर था कि वहां झाड़ियों में से एक चीता उछल कर बाहर आया और राजा सत्यपाल के घोड़े पर झपट पड़ा । चीते का घोड़े पर झपटना था कि घोड़ा बुरी तरह से भड़का और अंधाधुंध दौड़ने लगा । राजा ने बहुत कोशिश की, लेकिन घोड़ा काबू में ही नहीं आ राह था । वह दौड़े ही जा रहा था । फिर एकाएक एक विचित्र-सा स्वर सुनाई दिया और घोड़ा शांत हो गया और थोड़ी देर बाद एक पेड़ के पास रुक गया ।

राजा ने उस स्वर को पहचानने की कोशिश की । वह एक भील युवक का स्वर था । भील लोग अपने भड़के हुए घोड़ों को ऐसी ही आवाज़ से काबू करते हैं । इसके अलावा वे घुड़सवारी में भी माहिर समझे जाते हैं ।

राजा सत्यपाल की अब समझ में आ गया कि वह भील देश में प्रवेश कर चुका है, पर अभी उसकी सरहद पर ही है । बहरहाल, राजा ने चारों ओर अपनी नज़र दौड़ायी और फिर आहिस्ता से अपने घोड़े से उतर पड़ा ।

तभी पेड़ों के पीछे से एक भील युवक मुस्कराता हुआ राजा के सामने आ खड़ा हुआ । राजा सत्यपाल ने उसे ग़ौर से देखा और फिर उससे प्रश्न किया, "क्या तुम्हीं ने अपने मुंह से वह विशेष ध्वति की थी जिससे मेरा घोड़ा रूक गया?"

युवक ने स्वीकारात्मक ढंग से अपना सर हिलाया, और फिर बड़े गांभीर्य के साथ बोला, "लगता है आप काफी थक गये हैं । आप थोड़ी देर के लिए विश्राम कर लिजिए । मैं अभी चलता हूं । कुछ ही देर में लौटूंगा ।" और यह कहकर वह युवक पेड़ों के झुरमुट में अदृश्य हो गया ।

उस भील युवक के विलक्षण रूप और स्वर से राजा सत्यपाल काफी प्रभावित हुआ । उसे कुछ संदेह भी हुआ । इसके बावजूद वह धीमे से मुस्कराया और एक पेड़ के नीचे बैठ गया ।

थोड़ी ही देर बाद वह युवक कुछ फल

लेकर लौटा । उसके पास चमड़े की एक थैली भी थी जिसमें वह पीने का पानी लेता आया था ।

फलों को उसने राजा के सामने रख दिया । उन्हें स्वीकार करते हुए राजा सत्यपाल बोला, "मैं तुम्हें अपने यहां उचित पद दे सकता हूं ।"

भील युवक ने प्रत्युत्तर में कहा, "मैंने केवल अपना कर्त्तव्य पूरा किया है । मैंने कोई प्रतिफल नहीं चाहा । आब मैं चलता हूं ।" और इन्हीं शब्दों के साथ वह युवक चलने को हुआ ।

राजा सत्यपाल को युवक के ये शब्द अच्छे नहीं लगे । वह एकदम आवेश में आ गया और बोला, "तुमने यह सब कैसे कहा? क्या तुम यह जानते हो कि मैं चंदन देश का नरेश हूं और तुम मेरे सामंत राज्य के एक नागरिक हो?"

राजा का यह प्रश्न सुनकर वह युवक तुरंत रुका और पलटकर बोला, "मैं यह अच्छी तरह जानती हूं कि आपने मुझे राजा जयसेन की पुत्री के रूप में पहचान लिया है, और आप मेरा राज़ जानने के लिए ही इस तरह अहंकार से भरकर बोले हैं ।"

युवती की बात सुनकर राजा हंस पड़ा । कहने लगा, "जिस तरह तुम भर्रायी हुई आवाज़ में बोली थी, वह तुम्हें फब नहीं रही थी । अच्छा, अब चलता हूं, कीर्तिसेना ।"

इस पर कीर्तिसेना बोली, "ज़रा

रुकिए । आप मेरे साथ चलिए ।"

राजा सत्यपाल निस्संकोच कीर्तिसेना के पीछे-पीछे चलने लगा । वे थोड़ी दूर ही गये थे कि राजा को एक काफी विशाल प्रतिमा दिखाई पड़ी जो धूप में चमचमा रही थी । कीर्तिसेना ने उसके सामने अपना सर नवाते हुए कहा, "हम इस देवी को 'स्वयंशक्ति माता' कहकर पुकारते हैं, और हमारा विश्वास है कि इसकी कृपा से हमारी हर प्रकार की समस्या दूर हो जाती है ।"

तब राजा सत्यपाल ने भी बड़ी श्रद्धा से उस देवी की प्रतिमा के सामनेअपना सर नवा दिया, और फिर कीर्तिसेना से बोला, "हम दो महीने बाद इसी दिन यहां फिर मिलेंगे ।" और यह कहकर वह वहां से लौट गया ।
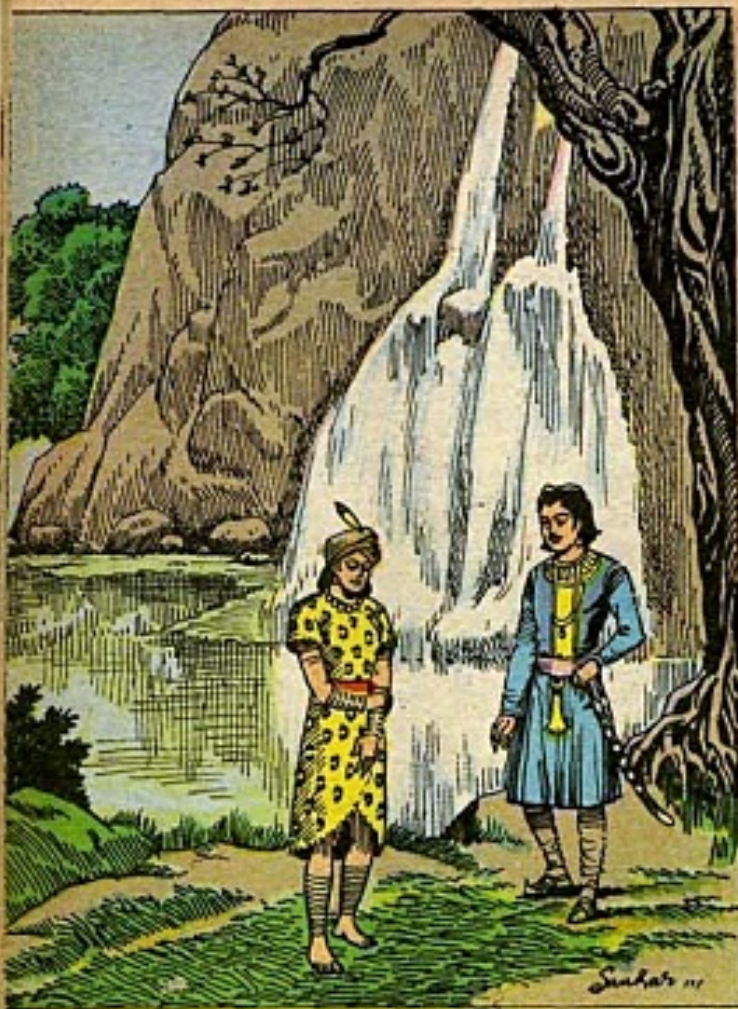
चंदनपुर लौटकर राजा सत्यपाल ने आदेश दिया कि देश के सभी भ्रष्ट और घूसखोर पदाधिकारियों को हिरासत में ले लिया जाये और उनकी समूची संपत्ति ज़ब्त करके राजकोष में जमा करा दी जाये ।

अगले दिन से ही यह आदेश लागू हो गया । इसके साथ ही सैनिकों के वेतन बढ़ा दिये गये, और राजा के नेतृत्व में सैनिक टुकड़ियों में बंट गये । कुछ ही दिनों में देश की प्रगति की राह में रोड़ा अटकाने वाले देश के दुश्मनों को चुन चुनकट जेल में ठूंस दिया गया ।

इस तरह दो महीने बीत गये ।अपने वचन के अनुसार राजा सत्यपाल नियत दिन और नियत समय पर भील राज्य में प्रवेश करके स्वयंशति माता की प्रतिमा के पास पहुंचकर कीर्तिसेना की प्रतीक्षा करने लगा । लेकिन कीर्तिसेना तो वहां पहले से ही मौजूद थी । वह कहीं छिपकर बैठी हुई थी । वह एकदम से राजा सत्यपाल के सामने प्रकट हुई । वह पहले की तरह पुरुष वेश में ही थी ।

उसे देखते ही राजा सत्यपाल ने कहा, "कीर्तिसेना, मेरी समस्याएं हल हुईं । मैं इसके लिए तम्हारा पूरे दिल से आभारी हूं । तू मेरे साथ चलकर महारानी का आसन ग्रहण करो और मुझे थोड़ा उत्रृण करो । यह मेरा तुमसे अनुरोध है ।"

कीर्तिसेना ने उत्तर में केवल अपना सर झुका दिया । वह लजा गयी थी और उसका चेहरा लाल हो रहा था ।

कुछ दिनों बाद कीर्तिसेना के मन की अवस्था का उसके पिता को भी पता चल गया । उसने अपने बड़े बेटे के हाथ राजा सत्यपाल के लिए अनेक उपहार भेजे, और साथ में यह भी प्रार्थना की कि वह उसकी बेटी कीर्तिसेना से विवाह कर ले । यह संदेश पाकर राजा सत्यपाल आनंद से भर गया । उसने तुरंत अपनी स्वीकृति दे दी और शीघ्र ही सत्यपाल और कीर्तिसेना विवाहसूत्र में बंध गये ।

कीर्तिसेना से विवाह हो जाने के बाद राजा सत्यपाल ने भील राज्य की सेना की सहायता से मिहिर देश पर आक्रमण कर दिया और शीघ्र ही वहां के राजा प्रचंडवर्मा को पराजित कर दिया ।

राजा सत्यपाल से पराजित होने के बाद राजा प्रचंडवर्मा ने उससे भेंट की और बोला, "सत्यपाल, युद्ध में हारने या राज्य खोने का मुझे ज़रा भी रंज नहीं। पर मेरी बेटी मधूलिका मेरे लिए चिंता का विषय है। वह कब से तुम्हारे प्रति आतुर थी। अब मेरी तुमसे यही प्रार्थना है कि तुम उसे अपनी छोटी रानी बना लो। उस पर तुम्हारा भारी उपकार होगा।"

राजा सत्यपाल ने राजा प्रचंडवर्मा का यह प्रस्ताव ठुकराया नहीं। उसे स्वीकार कर लिया। इस तरह राजा सत्यपाल और मधूलिका भी विवाह-सूत्र में बंध गये और प्रचंडवर्मा राजा सत्यपाल का सामंत घोषित कर दिया गया। सत्यपाल अब कीर्तिसेना और मधूलिका के साथ सुख-शांति से रहने लगा। उसने अब अपनी सभी समस्याओं पर काबू पा लिया था।

बैताल ने कहानी समाप्त करके राजा विक्रम से पूछा, "राजन्, राजा सत्यपाल के पिता चंद्रपाल के भोग-लिप्सा के कारण उसके देश की हालत बिगड़ती गयी, लेकिन सत्यपाल ने अपनी लगन और कार्यदक्षता से उस हालत को सुधारा। आम तौर पर, दूसरे राजाओं के प्रति हमारा बरताव कैसा हो, यह तय करने के लिए राजनीति चातुर्य की आवश्यकता होती है। सत्यपाल में ऐसा चातुर्य नहीं था, बल्कि उसके स्वभाव में एक प्रकार की चंचलता थी। वह मधूलिका से विवाह तो करना चाहता था, लेकिन अपनी इच्छा व्यक्त करने से सकुचाता था। कीर्तिसेना से भी उसने दूसरी तरह का व्यवहार किया। उससे विवाह कर लेने के बाद उसने मधूलिका से भी विवाह कर लिया। यह सब उसके स्वभाव की चंचलता का ही द्योतक है। सत्यपाल एक तरह से, और उसका पिता दूसरी तरह से, अपने देश के हित में नहीं दीखते। मैं इन संदेहों का समाधान चाहता हूं। यदि आप इनका समाधान जानते हुए भी कुछ नहीं बोलेंगे तो आपका सर फट जायेगा।"
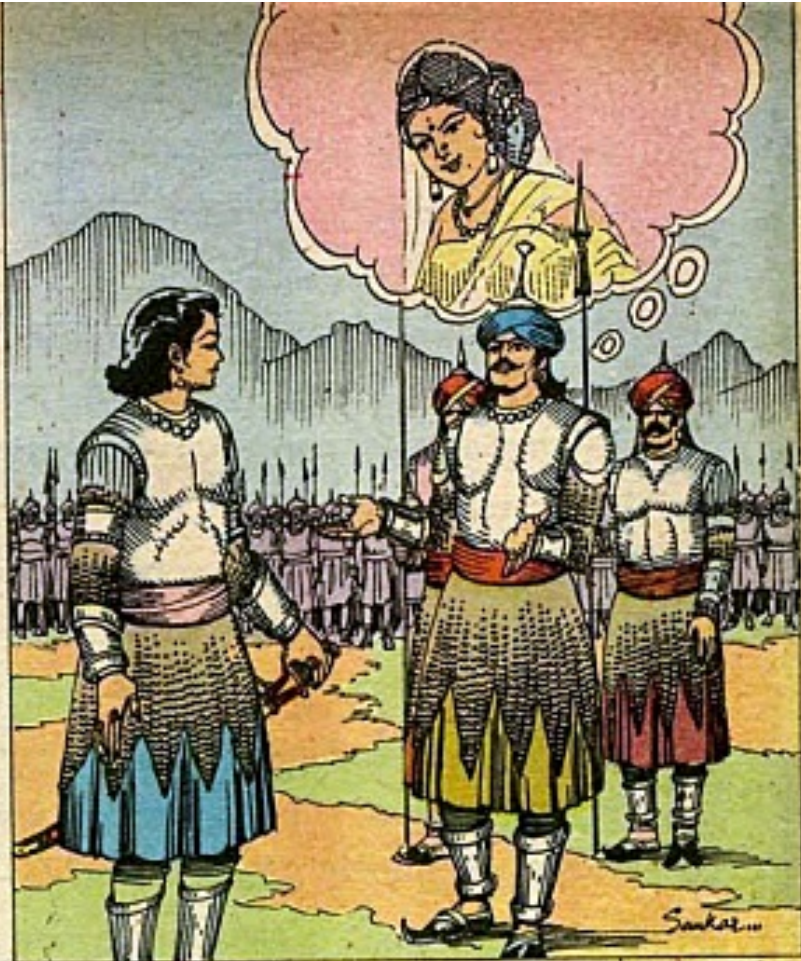
राजा विक्रम को आखिर बोलना ही पड़ा, "राजा सत्यपाल ने राजसिंहासन पर बैठने से लेकर मधूलिका से विवाह करने तक जो कुछ भी किया, ठीक ही किया। जब उसने

अपने महामंत्री की सलाह न मानकर विदेशी खतरों से निपटने से पहले आंतरिक समस्याओं से निपटने की ही ठानी, तो इससे स्पष्ट हो गया कि उसमें राजनीति-चातुर्य की कमी बिलकुल नहीं है। किसी भी राजा के लिए सबसे पहले प्रजा का विश्वास प्राप्त करना ज़रूरी होता है, और यही उसकी असली ताकत होती है। वह यह राज़ जानता था। इसीलिए उसने अपने भ्रष्ट पदाधिकारियों पर अंकुश लगाकर भीतरी अशांति को दूर किया। भील देश का राजा आज़ाद ज़रूर होना चाहता था, लेकिन वह मिहिर देश के राजा की तरह चंदन देश को निगल जाना नहीं चाहता था। कीर्तिसेना ने राजा सत्यपाल को अपनी कुलदेवी की मूर्ति के पास ले जाकर परोक्ष रूप से यह स्पष्ट कर दिया कि वह उसे चाहती है। राजा सत्यपाल ने मधूलिका के अहंकार के बारे में काफी कुछ सुन रखा था। इसीलिए उसने कीर्तिसेना के सामने विवाह का प्रस्ताव एक तरह से स्वयं रखा। मधूलिका सत्यपाल को चाहती ज़रूर थी, लेकिन अहंकारवश अपनी उस भावना को दबाये हुए थी। जिस समय उसका पिता युद्ध की तैयारी कर रहा था, उस समय संभवतया मधूलिका के मन में यह विचार रहा होगा कि उसका पिता राजा सत्यपाल को युद्ध में हराकर उसके सामने पुरस्कार स्वरूप उसे पेश करेगा। लेकिन युद्ध में हारकर जब प्रचंडवर्मा ने राजा सत्यपाल से विशेष अनुरोध किया कि वह उसकी बेटी से विवाह कर ले तो उसने वह प्रस्ताव ठुकराया नहीं। इससे उसका वर्चस्व बना रहा। इस सब से यही पता चलता है कि राजा सत्यपाल राजनीति में सिद्धहस्त था और वह यह अच्छी तरह जानता था कि प्रतिकूल स्थितियों को अनुकूल कैसे बनाया जाता है।"

बैताल को उत्तर देने से राजा विक्रम का मौन भंग हो चुका था। इसलिए बैताल लाश समेत वहां से अदृश्य हो गया और पहले की तरह उसी पेड़ की शाखा से जा लटकने लगा।

—कल्पित

(आधार : लक्ष्मीगायत्री की रचना)

भारत के पशु-पक्षी

लंबू सारस

सारस एक ऐसा पक्षी है जो संसार में हर कहीं देखा जाता है । जब किसी के घर में बच्चा होने की आशा हो, तो इसका उल्लेख आम तौर पर "सारस का आगमन" कह कर किया जाता है । इसका अर्थ यह हुआ कि उड़ता हुआ सारस अपनी चोंच में कपडे में लिपटा एक शिशु ला रहा है ।

सारसों में दो प्रकार के सारस-यानी नौका की चोंच वाला अफ़्रीकी सारस और एशियाई भू-भाग का बड़े डीलडोल वाला सारस प्रवासी हैं और भारत में देखे जाते हैं । लेकिन भारत का सारस काली गर्दन वाला होता है । इसकी ऊंचाई लगभग आदमी की ऊंचाई के बराबर होती है और यह सारसों में सबसे लंबा होता है । इस लंबू पक्षी की टांगें पतली और लाल होती हैं । इसकी चोंच भी लंबी और काले रंग की होती है, और इसकी गर्दन पतली और मोटी होती है जिस पर नीली-हरी धातु की चमक सी रहती है । इसके नीचे बिलकुल धवल-सफेद रंग रहता है और चोटी चमकीली काली होती है । जिस समय यह उड़ रहा होता है, उस समय इसके फैले हुए सफेद पर, जिनके बीचों-बीच काली धारी-सी रहती है, बड़े अच्छे लगते हैं ।

यह पक्षी आम तौर पर अकेला पाया जाता है या ज़्यादा से ज़्यादा जोड़े में होता है, लेकिन झुंड में यह कभी नहीं होता । यह बड़ी कर्कश आवाज़ निकालता, इसी से यह पहचाना जाता है । मछली, मेंढक या छोटे-छोटे रेंगने वाले कीड़ों का शिकार यह उथले पानी या दलदल में करता है । दक्षिण भारत में यह पक्षी बहुत ही कम देखा जाताहै, लेकिन उत्तर-पूर्व और उत्तर-पश्चिम में इसे अक्सर देखा जा सकता है ।

आज का भारत साहित्य-दर्पण में

[भारत एक विशाल देश है जिसमें सदियों से कई भाषाएं और कई संस्कृतियां पनपती रही हैं । भारत की प्रत्येक मुख्य भाषा का साहित्य बहुत ही समृद्ध है । हमें पुरातन काल के महान ग्रंथों के बारे में कुछ-न-कुछ तो जानकारी रहती ही है, लेकिन हमें अपने समय की उत्कृष्ट कृतियों के बारे में बहुत कम जानकारी है । इन पृष्ठों में चंदामामा तुम्हें हमारे इस युग के कुछ उपन्यासों की कथाएं बतायेगा । ये उपन्यास भारत की विभिन्न भाषाओं में लिखे गये हैं । कथाओं का विवरण बहुत संक्षेप में रहेगा । लेकिन हमें उम्मीद है कि इससे हमारे पाठकों को ये] कृतियां मूल रूप में या अनूदित रूप में पढ़ने की प्रेरणा मिलेगी।

—संपादक

प्रेमचंद का गोदान
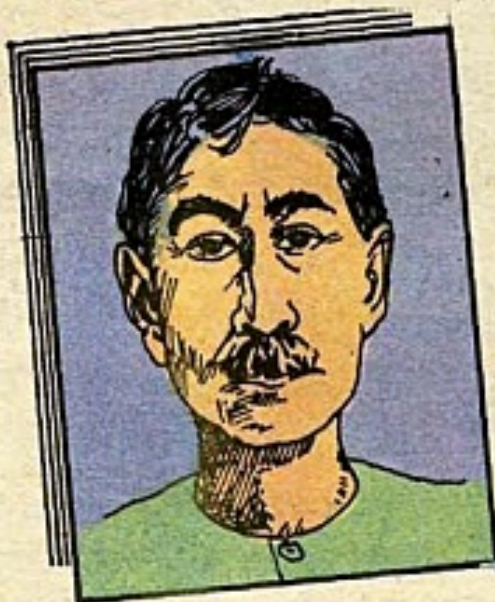
एक किसान है होरीराम । वह अयोध्या के बेलारी नाम के गांव में रहता है । उसकी इच्छा है कि उसके पास एक गाय हो, लेकिन गाय खरीदने के लिए उसके पास पैसा नहीं है । एक और ग्रामीण है भोला । वह बहुत गरीब है । उसकी पत्नी नहीं रही । वह फिर शादी करना चाहता है । वह होरीराम को एक गाय देता है ताकि होरीराम उसके लिए दुल्हन ढूंढ़े । गाय को ज़्यादा खिलाने की ज़रूरत नहीं । उसे थोड़ा-सा चारा देने से ही बात बन जाती है । होरीराम उसकी कीमत भी बाद में चुका सकता है ।

भोला के घर से गाय होरी के घर में पहुंच जाती है, लेकिन उसके साथ ही ढेर सारी समस्याएं भी आ जाती हैं । होरी का बेटा गोबर जब भोला के घर गाय लाने जाता है तो वहां उसकी भेंट भोला की विधवा बेटी झुनिया से होती है, और वे दोनों शादी कर लेते हैं । होरी के घर में गाय आ जाने से होरी के सौतेले भाई हीरा के मन में ईर्ष्या जगती है । हीरा होरी से अलग हो चुका है । वह उस गाय को दूसरों की आंख बचकर ज़हर दे देता है । पर उसकी शरारत पकड़ी जाती है । अब उसे डर है कि उसे इस शरारत के लिए सज़ा मिलेगी । इसलिए वह गांव छोड़कर भाग खड़ा होता है ।

जल्दी ही गोबर और झुनिया की बात सब को पता चल जाती है । एक विधवा से शादी करना और वह भी मां-बाप की जानकारी के बिना, पाप समझा जाता है । लेकिन होरी की पत्नी धनिया को झुनिया पर बहुत दया आती है और वह उसे अपने घर में शरण दे देती है । गोबर लखनऊ चला जाता है । उधर झुनिया के पिता, भोला, को चैन नहीं । वह अपनी बेटी के पाप को क्षमा नहीं कर पाता । वह चाहता है कि होरी उसे अपने घर से निकाल दे । लेकिन होरी ऐसा करने से इनकार कर देता है । इससे भोला चिढ़ जाता है और वह अपनी गाय के लिए पैसा मांगता है । होरी वह रकम चुका नहीं पाता, इसलिए भोला उसके बैलों को ले जाता है ।

शहर में गोब ने अच्छी कमाई की है । वह कुछ समय बाद अपने गांव में लौट आता है । गांव वाले उससे बहुत खुश हैं । भोला भी होरी के बैल लौटा देता है ।

झुनिया अपने पति गोबर के साथ रहने के लिए शहर चली जाती है, लेकिन शहर का जीवन उसे बहुत ही नीरस लगता है । उसके पहले बच्चे की मृत्यु भी हो गयी है । गोबर एक कारखाने में काम करता है, पर जब वह शाम को घर लौटता है तो वह पिये हुए रहता है, और झुनिया को परेशान करता है ।

कारखाने में हड़ताल हो गयी है । कामगारों के दो दलों के बीच फसाद होता है जिसमें गोबर की बुरी तरह पिटाई हो जाती है । झुनिया उसकी खूब सेवा करती जिससे वह फिर से स्वस्थ हो जाता है । इससे गोबर का उसके प्रति दृष्टिकोण बदल जाता है । स्थिति में फिर सुधार होने लगता है । उसके दूसरे बच्चे की देखभाल डॉ. मालती नाम की एक समाज सेविका करती है । गोबर उसी के उद्यान में माली का काम करता है ।

उधर गांव में होरी का जीवन संघर्ष से भरा रहता है । उसने अपनी पहली बेटी की शादी के लिए कर्ज लिया था, और दूसरी बेटी रूपा की शादी उसे मजबूर होकर एक अमीर व्यक्ति से करनी पड़ी थी । उस अमीर व्यक्ति की पहली पत्नी नहीं रही थी और वह उम्र में भी बहुत बड़ा था । लेकिन रूपा ने इस बात को लेकर किसी प्रकार का झंझट खड़ा नहीं किया, बल्कि वह तो इतनी अमीरी के बीच आकर बहुत खुश है और अपने बाप को एक गाय भी भेज देती है ।

लेकिन जब तक वह गाय भेजती है, तब तक उसका बाप एक खदान में काम करते-करते टूट चुका होता है और मरने के करीब है । हां, मरने से पहले उसे एक बात का संतोष है-उसका भाई, हीरा, जिसने जहर देकर होरी की पहली गाय को मार डाला था, हमेशा उसी के सपनों से भयभीत रहता है । अब वह होरी से क्षमा मांगने उसके यहां आता है । दूसरे, उसका पोता, यानी गोबर का दूसरा बच्चा भी वहां पहुंचा हुआ है, जिससे होरी को बहुत खुशी मिली है ।

जिस समय होरी मर रहा होता है, उस समय होरी का भाई, हीरा, अपनी भाभी धनिया से कहता है कि उसे गोदान करना चाहिए ताकि होरी की आत्मा को शांति मिले । लेकिन धनिया के पास तो उस समय कुछ सिक्कों को छोड़कर फूटी कौड़ी भी नहीं है । वह अपने मृत पति की ठंडी हथेली पर वे सिक्के रख देती है और ब्राह्मण से कहती है कि वह मृत व्यक्ति से उन्हें ही गोदान समझकर स्वीकार कर ले। फिर वह बेहोश होकर गिर पड़ती है ।

उपन्यास की कथावस्तु यही है किंतु इसमें और भी कई छोटे-छोटे अवांतर प्रसंग हैं जिनमें गरीबों की दुर्दशा का बखान किया गया है । साथ ही अमीरों का चित्रण भी भरपूर हुआ है और महत्वाकांक्षी लोगों की कलई खोली गयी है । विशेष रूप से इसमें ग्रामीण जीवन पुनर्जीवित हो उठा है ।

हिंदी की इस अमर कृति के लेखक प्रेमचंद का जन्म १८८० में वाराणसी के निकट हुआ था । उन्होंने उर्दू और फारसी में शिक्षा प्राप्त की और पहले अपनी कृतियां उर्दू में ही लिखीं । १९३६ में इनका देहांत हो गया । आधुनिक भारतीय कथा-लेखन में इन्हें युग-प्रवर्तक माना जाता है ।

क्या तुम जानते हो?

१. १५ वीं शताब्दी के वैष्णव कवि विद्यापती ने किस भाषा में रचनाएं कीं?

२. जिन कुंजों में ऋषि-मुनि तपस्या करते थे उन्हें क्या कहते थे?

३. कहा जाता है कि एक ऋषि ने वेगवती गंगा को निगल लिया और फिर उसे अपने कान से निकाल दिया । कान से निकली नदी को दूसरा नाम दिया गया । यह ऋषि कौन था? और उस नदी का नाम क्या पड़ा?

४. १९६६ में प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ताशकंद में किससे मिलने गये?

५. थानेश्वर-कन्नौज में दक्षिण के किस राजा ने हर्षवर्धन को पराजित किया?

६. वह पहला भारतीय वास्तुकार कौन था जिसका ईसा पूर्व ५ वीं शताब्दी के ग्रंथों में उल्लेख मिलता है?

७. महाभारत में बताया गया है कि जनमेजय की यज्ञाग्नि से एक बहुत ही खतरनाक सर्प-राज को बचाया गया । उस सर्प का नाम क्या था?

८. पारसी लोग छः ऋतुएं मनाते हैं, और हर ऋतु में धन्यवाद उत्सव भी मनाते हैं । इन उत्सवों का नाम क्या-क्या है?

९. एकलव्य और रानी लक्ष्मी पुरस्कार किस खेल के लिए दिये जाते हैं?

१०. भारत की वह कौन-सी रेल गाड़ी है जो अधिकांश राज्यों में से होकर निकलती है?

११. उत्तरी केरल का तेलिचरी क्यों प्रसिद्ध है? विश्व को इसका सबसे बड़ा योगदान क्या है?

१२. फरक्का बांध,जो कि भारत में अपनी तरह का सबसे बड़ा बांध है, किस विशेष उद्देश्य से तैयार किया गया था?

१३. अजंता के चित्रों को भित्ति-चित्र कहा जाता है । क्यों?

१४. श्रीपेरंबदूर, जहां राजीव गांधी की हत्या हुई थी, किसी विख्यात संत का जन्म स्थान भी है । वह संत कौन था?

१५. नटराज के रूप में भगवान शिव के मंदिरों में सबसे प्रसिद्ध मंदिर कौन-सा है?

उत्तर

१. मैथिली ।

२. तपोवन ।

३. जाह्नु-जाह्नवी ।

४. पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान ।

५. पुलाकेशी-द्वितीय ।

६. महागोविंद-धम्मपद में ।

७. तक्षक ।

८. गहंबर ।

९. खो-खो ।

१०. हिमगिरी एक्सप्रेस । यह कन्याकुमारी से जम्मू तक चलती है, और नौ राज्यों में से होकर गुजरती है । ये राज्य हैं: तमिलनाडु, केरल, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली तथा जम्मू-कश्मीर ।

११. भारत के सर्कस का जन्म तेलिचरी में हुआ था । बाद में सर्कस के कई कलाकार यहीं से आये ।

१२. कलकत्ता बंदरगाह को जहाज़रानी की दृष्टि से गहरा करने के लिए ।

१३. ये चित्र दीवारों पर हैं ।

१४. संत रामानुज ।

१५. चिदंबरम मंदिर ।

सही दंड

रुद्रपुर में गुरुदास नाम का एक धनवान व्यक्ति रहता था। जो कोई उससे सलाह लेने आता उसे वह ऐसी सलाह देता; जिससे उसका नुक़सान ही हो।

एक बार गुरुदास के पड़ोस में रहने वाले जगन्नाथ को अचानक किसी बीमारी ने धर दबोचा और उसे खाट पकड़नी पड़ी। वैद्य ने उसकी जांच की और कहा, "कृष्ण तुलसी के पत्तों के रस से ही इस रोग की चिकित्सा हो सकती है। केवल गुरुदास के घर के पिछवाड़े में ही कृष्ण तुलसी का पौधा है।"

वैद्य की सलाह के अनुसार जगन्नाथ का बेटा गुरुदास के घर पहुंचा तो उसने कहा, "कृष्ण तुलसी का पत्ता तोड़ना पाप है। अपने घर में मैं ऐसा पाप नहीं होने दूंगा। गांव के बनिये की दुकान पर तुम्हें कृष्ण तुलसी के बीज मिल जायेंगे। उन्हें अपने घर के पिछवाड़े में बो लो। पौधा उग आये, तब अपने पिता की चिकित्सा करवा लेना।"

गुरुदास के उत्तर से जगन्नाथ के बेटे को बहुत निराशा हुई। निराश होकर अपने घर लौट रहा था कि उसे रास्ते में एक संन्यासी ने उससे कहा, "बेटा, गुरुदास ने तुम्हें ठीक सलाह दी है। तुम वैसा ही करो जैसा उसने बताया है।"

संन्यासी के चेहरे पर अपूर्व प्रकाश था। जगन्नाथ का बेटा उस के सामने कुछ न बोल सका। वह सीधा बनिये की दुकान पर गया और वहां से कृष्ण तुलसी के बीज खरीद लाया। फिर उसने उन बीजों को अपने घर के पिछवाड़े में बो दिया। लेकिन ताज्जुब! जैसे ही उसने बीज बोये, वैसे ही अंकुर फूट पड़े और देखते-ही-देखते वहां कृष्ण तुलसी का पौधा लहलहा उठा। जग्न्नाथ के बेटे ने कुछ पत्ते लियेऔर उनका रस निकाल कर अपने पिता को दिया। कुछ

वसुंधरा श्रीवास्तव

ही दिनों में उसका पिता ठीक हो गया ।

इसके बाद वह संन्यासी एक दिन जगन्नाथ से मिला और बोला, "गुरुदास की सलाह से ही तुम्हारी बीमारी का अंत हुआ है । इसलिए तुम उसके पास जाकर उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करो और उससे हो कि उसकी सलाह हमेशा बहुत ही कारगर होती है, इसलिए वह तुम्हें जीवन में उन्नति पाने के लिए कोई बढ़िया सलाह दे ।"

जगन्नाथ ने वैसा ही किया जैसा उसे संन्यासी ने बताया था । लेकिन गुरुदास के मन में तो उलटे जगन्नाथ के स्वस्थ हो जाने पर ईर्ष्या हो रही थी । वह उसे नुक़सान पहुंचाने पर तुला हुआ था । इसलिए उसने कहा, "देखो, तुम्हारे घर में जो भी रुपया-पैसा है, उसे तुम अपने घर के पिछवाड़े में गाड़ दो । वहां एक पौधा उगेगा । वह पौधा उगकर पेड़ बन जायेगा । जब वह पेड़ बन जायेगा तो उस पर फूलों-फलों की जगह रुपये-पैसे लगने लगेंगे । इससे तुम्हें पैसे की चिंता कभी नहीं रहेगी ।"

गुरुदास के घर से लौटकर जगन्नाथ ने संन्यासी को वह सब बता दिया जो गुरुदास ने उससे कहा था और बोला, "इससे तो अब यही सिद्ध होता है कि गुरुदास अव्वल दर्जे का दुष्ट है, और वह चाहता है कि किसी-न-किसी तरह मेरी सारी संपत्ति नष्ट हो जाये और मैं परिवार समेत मिट जाऊं ।"

इस पर संन्यासी फिर हंसा और कहने लगा, "तुम्हें अब तक पता ही नहीं चला कि गुरुदास की सलाह तुम्हारे लिए कितनी नेक होती है । इसीलिए तुम ऐसा कह रहे हो । मेरी बात मानो और गुरुदास ने जैसा कहा है, वैसा ही करो ।"

जगन्नाथ ने वैसा ही किया ।रातों-रात जगन्नाथ के पिछवाड़े में, जहाँ उसने पैसे गाड़े थे, एक पौधा उगा और वह पौधा वृक्ष बन गया । उस वृक्ष की हर टहनी पर पैसे उग आये थे । जगन्नाथ जहां से पैसे तोड़ता, वहां और पैसे उग आते ।

संन्यासी ने अगले दिन जगन्नाथ से कहा, "इस पेड़ पर जितने भी रुपये-पैसे लगे हैं, उन सब को तोड़ लो, और सुख-चैन से रहो । कल तक यह कृष्ण तुलसी का पौधा और रुपये-पैसे का पेड़ ग़ायब हो जायेंगे ।"

जगन्नाथ ने संन्यासी को साष्टांग प्रणाम किया और बोला, "महात्मा, यह सब आपकी महिमा है । आप उस निकृष्ट गुरुदास को गौरव दिलाना चाहते हैं । लेकिन मैं इसका कारण समझ नहीं पा रहा हूं ।"

संन्यासी का उत्तर इस प्रकार था, "गुरुदास को तुमने ठीक से नहीं समझा । वह एक पुण्यात्मा है ।" और यह कहकर वह संन्यासी वहां से चला गया ।

संन्यासी की बात सुनकर जगन्नाथ चौंक उठा, फिर उसने सोचा कि वह गुरुदास को लेकर इतना परेशान क्यों है । बहरहाल, उसने उस पेड़ से सारे रुपये-पैसे तोड़ लिये और उन्हें बोरों में भर लिया । अपने उन रुपये-पैसों से वह हर किसी की मदद करता ।

इसी तरह दिन बीतते गये । एक दिन नरसिंह नाम का एक आदमी जगन्नाथ के पास आया और बोला, "इस वक्त गुरुदास गांव में नहीं है । इसीलिए मैं तुम्हारे पास आया हूं । मुझे कुछ कर्ज़ चाहिए । अभी ।"

नरसिंह की इस मांग से जगन्नाथ थोड़ा परेशान हुआ । बोला, "तुम्हें पैसे की ज़रूरत है तो तुम मुझ से सीधे-सीधे मांगो । यह बीच में गुरुदास कहां से आ टपका?"

इस पर नरसिंह झुंझला गया और कहने लगा, "आज तक मैं यही सोचता रहा कि तुम एक बढ़िया इंसान हो । जब भी मैं गुरुदास के पास पैसा लेने गया, उसने बिना कोई प्रश्न किये तुरंत वह रकम निकालकर दे दी । अब जिस तरह तुम उसकी बुराई कर रहे हो, क्या यह तुम्हें शोभा देता है?"

जगन्नाथ कुछ बोल नहीं सका । उसने

चुपचाप नरसिंह को मुंहमांगी रकम दे दी । फिर उसने जब गांव में पूछताछ की तो उसे पता चला कि गुरुदास हमेशा सब का भला करता रहा है । इससे वह बहुत दुखी हुआ । उसने सोचा-जब सबके साथ गुरुदास भलाई करता है तो उसी के साथ ही ऐसा व्यवहार क्यों करता है । ज़रूर उस में कोई ख़ामी रही होगी । यह भी हो सकता है कि उसने उसकी भलाई के लिए ही वे सलाहें दी हों, लेकिन उसने ही उन्हें ग़लत समझा हो ।

दूसरे दिन जैसे ही गुरुदास गांव को लौटा, जगन्नाथ फौरन उससे मिलने गया और उससे बोला, "संन्यासी ने जब तुम्हारी सलाहों की सराहना की तो मुझे उस पर यक़ीन नहीं हुआ । मैंने यही समझा कि यह संन्यासी की ही महिमा है । अब असलियत मेरी समझ में आयी है । मैंने तुम्हें ग़लत समझा । मुझे क्षमा करो ।"

गुरुदास ने जगन्नाथ की बात सुनकर कहा, "यह सब उस संन्यासी की महिमा से ही हुआ । अगर वह तुम्हें फिर कहीं दिखाई दे जाये तो तुम मुझे फौरन खबर देना । वह जब तक हमारे गांव में रहा, मैंने लोगों को जो भी सलाह दी, वह बड़ी लाभप्रद सिद्ध हुई । सलाह से ज़्यादा वे जो भी मुझसे मांगते, मैं उन्हें दे देता । इससे ही उन्हें कम लाभ हुआ । इसलिए मैंने अब लोगों को सलाह देना छोड़ दिया है । मदद ही देता रहा । अब जब तक संन्यासी मुझे फिर से राह नहीं बताता, मैं ऐसे ही अपना समय बिताऊंगा ।"

इस तरह गुरुदास ने जगन्नाथ के सामने अपना सारा दुखड़ा रो दिया । वह तो अपनी सलाह से लोगों को नुक़्सान ही पहुंचाना चाहता था, और यदि उसका अपना नुक़्सान होकर भी किसी और का नुक़्सान होता है तो वह इसके लिए भी तैयार रहता था ।

अब जगन्नाथ की समझ में आया कि संन्यासी ने कैसे गुरुदास जैसे नीच व्यक्ति को सही दंड दिया । उसका मन अब हलका हो रहा था । इस पर वह खुशी-खुशी अपने घर लौट गया ।

चंदामामा की खबरें

नेत्रहीन शिखर पर

महाराष्ट्र के १० नेत्रहीन पर्वतारोही हिमालय की श्रेणियों में पर्वतारोहण के लिए गये। उनमें से तीन १७,२२० फुट ऊंची शितिधर चोटी पर पहुंचने में सफल हुए। पर्वतारोहण के इतिहास में यह पहली बार है कि कोई नेत्रहीन व्यक्ति इतनी ऊंचाई तक पहुंचा है। इन में एक बहरा और गूंगा भी है। इन्हें दार्जिलिंग के हिमालय पर्वतारोहण संस्थान में प्रशिक्षण मिला था।

नाम में क्या है?

चीन की जनसंख्या एक अरब, ७ करोड़, २० लाख है। इनमें से लगभग ७ करोड़ २० लाख लोगों के नाम वांग हैं। अब एक वांग की दूसरे वांग से पहचान अलग कैसे की जाये? एक-स्वर वाले उपनामों की परंपरा चीन में दो हज़ार वर्ष पुरानी है। कोशिश अब यह हो रही है कि इसे बदला जाये। कैसे? कुछ चुने हुए लोकप्रिय नामों को मिलाकर-जैसे वांग-जुन या वांग-झांग। प्रयोगात्मक रूप से शांडोंग नाम के प्रांत ने २.८०० वांग नामों में परिवर्तन किया, लेकिन ज़्यादा कामयाबी नहीं मिली। सवाल अब यह उठाता है कि वे उन २५ करोड़ लोगों का क्या करेंगे जिनके नाम ली-लियू या झांग के साथ शुरू होते हैं?

सबसे छोटी उम्र का स्नातक

भारतीय मूल का गणेश सित्तमबलम ब्रिटेन का सबसे कम उम्र स्नातक है। उसे इसी जुलाई में सर्रे विश्वविद्यालय से गणित आनर्स में प्रथम श्रेणी की उपाधि प्राप्त हुई। इससे पहलेस्नातक बनने वाली १३ वर्ष ७ महीने की रूथ लारेंस थी। गणेश की ऐसी कोई योजना नहीं है कि वह गणित में उच्च अध्ययन जारी रखे। वह वापस स्कूल में जाना चाहता है, और चाहता है कि १६ वर्ष की उम्र तक वह जी.सी.एस.सी (जनरल सर्टिफिकेट इन स्कूल एग्ज़ामिनेशन) पूरा कर ले और बाद में सर्रे विश्वविद्यालय में आये। उसने ऐसे ही हंसी-हंसी में बी.एस.सी. (गणित) की परीक्षा दी थी।

अफ़ीमची की गवाही

एक व्यापारी अपने घोड़े पर सवार होकर किसी काम से दूर के किसी शहर के लिए रवाना हुआ । जिस समय वह एक गांव में पहुंचा, रात हो चुकी थी । इसलिए उसने निश्चय किया कि वह रात वहीं बितायेगा ।

तभी एक व्यक्ति उस व्यापारी के पास आकर गिड़गिड़ाते हुए बोला, "हुज़ूर, मुझे अफ़ीम खाने की आदत है । दो दिनों से मेरे हाथ एक पैसा तक नहीं लगा । चार आने दीजिए ताकि मैं आत्मा को शांत कर सकूं ।"

व्यापारी ने उस आदमी को चवन्नी देकर रुख़सत किया । एक घर में उसे ठहरने की जगह मिल गयी ।

उस घर के सामने ही एक खूंटी थी । उस खूंटी से व्यापारी ने अपने घोड़े को बांध दिया । सुबह जब वह उठा और चलने को तैयार हुआ तो उसने देखा कि उस घर का मालिक उसके घोड़े को लिये जा रहा है ।

व्यापारी ने घर के मालिक को आवाज़ लगायी और कहा, "आप घोड़े को कहीं मत ले जाइए । मुझे अभी रवाना होना है ।"

लेकिन घर के मालिक ने पलटकर उत्तर दिया, "यह घोड़ा मेरा है ।हर रोज़ मेरे घर के सामने वाली यह खूटी मेरे लिए एक घोड़े को जन्म देती है ।"

घर के मालिक का उत्तर सुनकर व्यापारी तिलमिला उठा और कहने लगा, "आप मेरे घोड़े को हड़पने की कोशिश कर रहे हैं ।"

लेकिन घर का मालिक धूर्त था, बोला, "मेरी बात पर तुम्हें यकीन नहीं होता तो तुम इस गांव में किसी से भी पूछ लो । मेरी यह खूंटी रोज़ एक घोड़े को जन्म देती है, और यह बात हर कोई जानता है ।"

उस गांव के ज़्यादातर लोग उस धूर्त व्यक्ति के समान ही थे और उसकी धूर्तता में शामिल थे । ये सब लोग मिलकर गांव

२५ वर्ष पूर्व चंदामामा में प्रकाशित कहानी

में आने वाले नये लोगों को अक्सर धोखा दिया करते, और यही उनका धंधा बन गया था। इसलिए व्यापारी की शिकायत पर किसी ने कान नहीं धरा।

लाचार होकर व्यापारी ने गांव के मुखिया के सामने फरियाद की । मुखिया ने उस घर के मालिक को बुलवाया और उससे स्पष्टीकरण मांगा।

घर के मालिक का वही जवाब था, "हुजूर, मेरे घर के सामने वाली खूंटी हर रोज़ एक घोड़े को जन्म देती है। आप कहें तो मैं अपने घर के पास के कई लोगों से गवाही दिलवा सकता हूं।"

आखिर, व्यापारी से मुखिया ने कहा, "तुम्हारे पास कोई गवाह तो है नहीं। गवाह होने पर ही मैं कोई फैसला सुना सकता हूं।"

तब व्यापारी को उस व्यक्ति की याद आयी जिसने उससे अफ़ीम खाने के लिए चार आने मांगे थे। व्यापारी उसे ढूंढ़ने के लिए इधर-उधर घूमने लगा। उधर वह घर का मालिक भी अपने गवाहों को लाने में लग गया। आखिर, व्यापारी ने उस अफ़ीमची को ढूंढ़ ही लिया। वह अब भी अफ़ीम के नशे में था। व्यापारी ने उस पर भरोसा रखकर उसे अपने प्रति हुए अन्याय के बारे में बताया। व्यापारी की बात सुनकर अफ़ीमची ने उसे आश्वस्त किया कि डरने की कोई बात नहीं, सब कुछ ठीक ही होगा और उसका घोड़ा उसे वापस मिलेगा। फिर वह उसके साथ मुखिया के यहां जा पहुंचा।
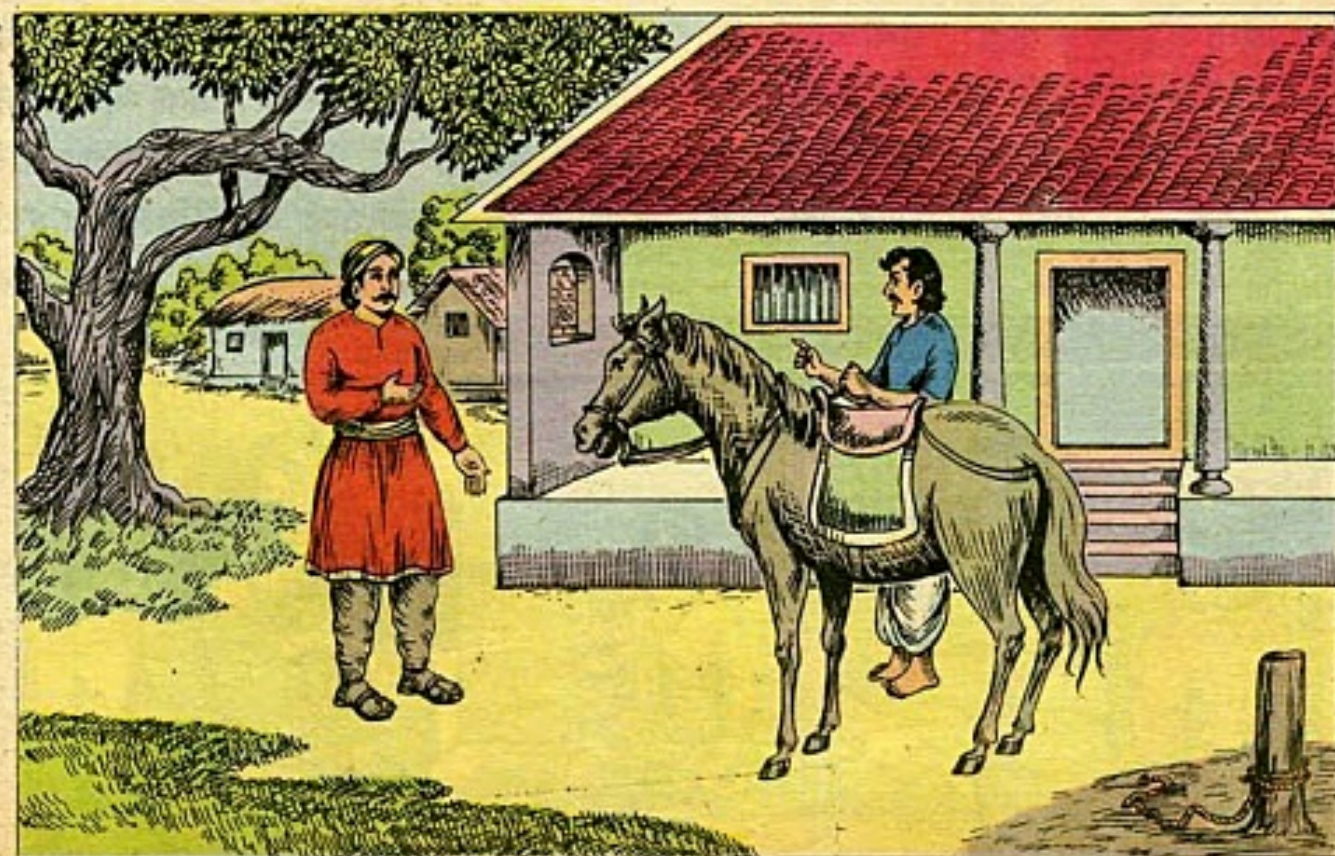
तब तक वह घर का मालिक भी अपने गवाहों के साथ मुखिया के यहां पहुंच चुका था । उसके गवाह मुखिया से कह रहे थे कि घर का मालिक सच कह रहा है, इसकी खूंटी हर रोज़ एक घोड़े को जन्म देती है ।

उधर जब व्यापारी के साथ वह अफ़ीमची वहां पहुंचा तो उसे देखकर सब व्यापारी की हंसी उड़ाने लगे और बोले, ''अरे, यही तुम्हें गवाह मिला था । इस अफ़ीमची पर कौन विश्वास करेगा! इसे तो अपनी भी सुध नहीं होती ।''

अफ़ीमची को देखकर मुखिया भी अपने को यह कहने से रोक न सका, ''लगता है अब भी तुम अफ़ीम के नशे में ही हो । तुम्हारे जैसे आदमी को मैं गवाह के रूप में कैसे ले सकता हूं?''

इस पर अफ़ीमची ने रत्ती भर भी संकोच किये बिना धड़ल्ले से कहा, ''ऐसी बात नहीं, हुज़ूर । मैं नशे में नहीं हूं । मैं तो रात भर जगकर तालाब के भीतर मछलियां भूनता रहा । रात-भर जगने के कारण ही मेरी यह हालत हो रही है ।''

अफ़ीमची की बात सुनकर मुखिया बोला, ''यह तुम जो कह रहे हो, इसी से पता चलता है कि तुम्हें अपनी सुध नहीं है । बेसुधी की इस हालत में जो तुम गवाही दोगे, उस पर मैं कैसे विश्वास करूं? मैं कैसे मान लूं कि तुम रात भर तालाब में रहे और वहां मछलियां भूनते रहे?''

तब उस बेसुध अफ़ीमची ने पलटकर उत्तर दिया, ''मालिक, आप जब इस बात पर विश्वास कर सकते हैं कि एक खूंटी हर रोज़ एक घोड़े को जन्म देती है, तब आप मेरी बात पर विश्वास क्यों नहीं कर सके? मुझे आप बेसुध कहकर कैसे दरकिनारे करना चाहते हैं?''

अफ़ीमची की बात से मुखिया को झटका लगा । वह एकदम संभल गया । अफ़ीमची के तर्क का उसके पास कोई उत्तर न था । उसने स्वयं को लज्जित अनुभव किया और उस घर के मालिक को काफी डांट-फटकार कर व्यापारी को उसका घोड़ा वापस दिलवाया ।

कैलास शिखर और कांचन शिखर के बीच औषधि पर्वत पर पहुंचकर हनुमान जांबवान द्वारा सुझायी गयी औषधियों की खोज करने लगा। सभी पौधे उसे एक समान दिखाई दे रहे थे। इससे हनुमान अपने पर कुढ़ने लगा और उसी कुढ़न में उसने पूरे पर्वत को उखाड़कर अपनी हथेली पर रख लिया और उसे लिये-लिये वहां से लौट पड़ा।

इतने बड़े पहाड़ के साथ लौटे हनुमान को देखकर वानर खुशी से नाच उठे और अपनी पूरी शक्ति से सिंहनाद करने लगे।

धरती पर उतर कर हनुमान ने वानर प्रमुखों को प्रणाम किया और विभीषण को उसने गले लगा लिया।

जिस पर्वत खंड को हनुमान पौधों-समेत उठाकर लाया था, उनके बीच से बहने वाली हवा इतनी गुणकारी थी कि उसी से राम और लक्ष्मण की मूर्च्छा टूट गयी और वे स्वस्थ दिखाई देने लगे। उनके साथ-साथ वहां मूर्च्छित पड़े वानर भी होश में आ गये।

संभावना यह भी थी कि यह हवा मृत राक्षसों को भी जीवित कर देती, लेकिन रावण मृत राक्षसों की संख्या को रहस्य ही बने रहने के लिए उन्हें सागर में फिंकवाये जा रहा था।

जब राम-लक्ष्मण तथा अन्य वानर वीरों को लगा कि औषधि पर्वत की अब कोई आवश्यकता नहीं है तो हनुमान उसे हिमालय पर वापस रख आया।

२८. इंद्रजित का यज्ञ

तब सुग्रीव ने हनुमान से कहा, "इंद्रजित तो लौट गया है। कुंभकर्ण मर चुका है। रावण के कई पुत्र भी मर चुके हैं। इसलिए अब रावण युद्ध के लिए आगे नहीं आयेगा। इसलिए हमें चाहिए कि आज रात हम लंका में प्रवेश करें। हमारे हर वानर वीर के हाथ में मशाल होगी।"

जैसे ही सूर्यास्त हुआ और चारों ओर अंधकार फैलने लगा, वैसे ही वानर वीर मशालें ले-लेकर लंका में प्रवेश करने लगे। लंका के द्वारों पर जो राक्षस पहरा दे रहे थे, वे वानरों की विशाल सेना को देखकर डर गये और वहां से भाग खड़े हुए। इस प्रकार वानरों को रोकने वाला कोई नहीं था, और वे यहां-वहां आग लगाते हुए आगे बढ़े जा रहे थे। अब चारों ओर आग ही आग दिखाई देने लगी जिसमें कई राक्षसों की जानें गयीं और उनकी संपत्ति भी नष्ट हो गयी।

कुछ राक्षस युद्ध के लिए तैयार हुए। सुग्रीव ने वानरों को आदेश दिया, "तुम राक्षसों से रावण के महल के निकट युद्ध करो।"

सुग्रीव से आदेश पाकर वानर योद्धा रावण के महल के सिंह द्वार की ओर चल दिये। उन्हें देखकर रावण अपना संतुलन खो बैठा और विक्षिप्त-सा दिखने लगा। उसने उसी विक्षिप्त अवस्था में कुंभकर्ण के दोनों पुत्रों, कुंभ और निकुंभ, को वानरों से युद्ध करने केलिए कहा। कुंभ और निकुंभ के साथ यूपाक्ष, शोणिताक्ष, प्रजंघ और कंपन भी थे। दोनों पक्षों के बीच घमासान युद्ध हो रहा था। इस युद्ध में अंगद ने सबसे पहले कंपन को मार गिराया। इसके बाद उसने शोणिताक्ष की तलवार खींच ली और उसी तलवार से उसे पार लगा दिया। फिर वह दूसरे राक्षसों से भिड़ गया। प्रजंघ उन्हीं में था। उसकी भी मृत्यु हो गयी। यूपाक्ष का काम मैंद ने तमाम किया।

अब अंगद कुंभ से जा भिड़ा। कुंभ कोई छोटा-मोटा योद्धा नहीं था। उससे लड़ते-लड़ते अंगद बेहोश हो गया। राम को जैसे ही इसकी खबर मिली, वैसे ही उन्होंने अंगद की मदद के लिए जंबवान को भेजा। लेकिन कुंभ की ताब लाना कोई आसान नहीं था। उसके बाणों के सामने कोई टिक नहीं

पा रहा था। यह देखकर सुग्रीव को गुस्सा आ गया। उसने कुंभ के बाण सहते हुए आगे बढ़ना शुरू कर दिया। वह उसी तरह आगे बढ़ता रहा, और जैसे ही वह उसके निकट हुआ, वह उसके धनुष पर झपटा और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये। कुंभ को अब सुग्रीव से मल्ल-युद्ध करना पड़ा जिसमें उसकी मृत्यु हो गयी।

अपने बड़े भाई की मृत्यु से कृद्ध होकर निकुंभ ने एक परिघ घुमा कर हनुमान पर दे मारा जो उसकी छाती से जा टकराया। परिघ के तो टुकड़े-टुकड़े हो गये, लेकिन उससे हनुमान को भी ज़बरदस्त धक्का लगा। इससे वह कृद्ध हो उठा और उसी कृद्ध अवस्था में उसने अपनी मुष्टि से कसकर उसकी छाती पर वार किया।

मुष्टि का निकुंभ की छाती पर लगना था कि उसके मुंह से खून का फव्वारा छूट पड़ा और वह मूर्च्छित होने को हुआ। लेकिन वह फिर संभला और हनुमान से युद्ध करने लगा। इस पर हनुमान ने निकुंभ को गले से पकड़ा और उसे ऊपर उठा कर हवा में ऐसे घुमाया जिससे उसकी गर्दन टूट गयी और उसकी मृत्यु हो गयी।

कुंभ और निकुंभ की मृत्यु के समाचार ने रावण को और विक्षिप्त कर दिया। अब उसने खर के पुत्र मकराक्ष को युद्ध के लिए भेजा। मकराक्ष सीधा राम से ही जा भिड़ा, जिससे वह तुरंत यमलोक जा पहुंचा।

अब रावण के लिए कोई चारा नहीं रहा था। उसे आखिर इंद्रजित को ही बुलाना पड़ा। इंद्रजित युद्धभूमि से लौटकर एक महायज्ञ का आयोजन करने को था। पिता से आदेश पाकर वह फिर यज्ञभूमि की ओर चल पड़ा। उसके इस आयोजन में वहां की स्त्रियों ने भी ऋत्विजों के लिए वस्त्र इत्यादि देकर अपना योग दिया।

इंद्रजित ने जो यज्ञ किया, वह काफी विचित्र था। उसने दर्भ की जगह लोहपात्रों का उपयोग किया। ऋत्विजों को लाल वस्त्र पहनाये गये थे। होम के लिए काली बकरी की बलि दी गयी।

यज्ञ की अग्नि से जो ज्वाला उठी, उसमें कोई धुआं नहीं था। यह विजय सूचक था। इस प्रकार इंद्रजित ने अग्नि में आहुति देकर

देव, दानव और राक्षसों का तर्पण किया और अदृश्य होने की शक्ति रखने वाले अपने विशिष्ट रथ पर सवार हो गया। वह रथ सूर्य के समान दीप्त हो रहा था।

इंद्रजित अब युद्धभूमि में था, लेकिन वह अदृश्य था, जब कि वह स्वयं हर किसी को देख सकता था। उसने वानर सेना के बीच सुरक्षित राम-लक्ष्मण को भी देखा और उन पर बाणों की वर्षा शुरू कर दी। उधर राम और लक्ष्मण ने भी अपने बाणों से आकाश को ढक दिया था। फिर भी इंद्रजित को एक भी बाण नहीं लगा था। इंद्रजित के बाणों ने कई वानर योद्धाओं को घायल कर दिया था जिससे वानर सेना को भारी क्षति पहुंच रही थी। लेकिन राम और लक्ष्मण के बाणों ने भी इंद्रजित के कई बाणों को निरस्त किया था।

लक्ष्मण बहुत गुस्से में था। उसने राम से कहा, "मुझे आज्ञा दें तो मैं ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करके सभी राक्षसों का अंत कर दूं।"

लेकिन राम ने उसे इसके लिए आज्ञा नहीं दी। उनका कहना था, "एक राक्षस के लिए धरती के सभी राक्षसों का वध करना ठीक नहीं होगा। हम इंद्रजित का ही किसी तरह काम तमाम करेंगे। हम दिव्यास्त्रों का उपयोग करेंगे।"

इतने में इंद्रजित ने एक और चाल चली। वह युद्धभूमि से कुछ देर के लिए हट गया और फिर सीता के माया-रूप के साथ प्रकट हुआ। उसने सोचा कि वह राम और लक्ष्मण को चिढ़ा-चिढ़ा कर उस मायावी सीता का वध करेगा ताकि उनका मनोबल टूट जाये।

इंद्रजित को युद्धभूमि में वापस आया देख हनुमान ने एक बड़ी-सी शिला उठायी और उसे लिये-लिये इंद्रजित की ओर बढ़ा। लेकिन हनुमान जैसे ही आगे बढ़ा, उसे इंद्रजित के रथ पर विलाप करती सीता दिखाई दी। वह कृषकाय हो रही थी। उसे देखकर हनुमान की आंखों में आंसू आ गये। उसने अपने साथ आये वानर वीरों की ओर देखकर कहा, "यह इंद्रजित अपने साथ सीता को क्यों लाया है? इसके पीछे क्या रहस्य हो सकता है?" और इन शब्दों के साथ ही वह आवेश से भरकर इंद्रजित पर प्रहार करने को हुआ। लेकिन इतने में इंद्रजित ने अपनी

तलवार म्यान से खींची और उसे उसने मायावी सीता की गर्दन पर रख दिया। फिर उसने उसे उसके खुले बालों से पकड़ा और उसे तरह-तरह की यातनाएं देने लगा।

हनुमान की आंखों से अब अविरल आंसू बहने लगे थे। उसने इंद्रजित को ललकारते हुए कहा, "अरे दुष्ट! अरे पापी। तुम यह क्या कर रहे हो? तुम्हें अपने व्यवहार पर शर्म से डूब मरना चाहिए। अगर तुमने सीता की जान ले ली तो समझ लो तुम्हारी मौत भी तुम्हें आ घेरने वाली है। तुम चाहे कितने भी बलशाली हो, अब तुम मेरे हाथ लगे हो, मैं तुम्हारी जान लिये बिना नहीं रहूंगा।"

इंद्रजित के साथ जो राक्षस सेना आयी थी, वह अब वानर सेना से जमकर मुकाबला कर रही थी। उधर इंद्रजित ने हनुमान से कहा, "तुम सब सीता के लिए यहां तक आये हो न! मैं इसे तुरंत तुम लोगों के सामने ही समाप्त किये देता हूं। इसके बाद तुम्हारी, तुम्हारे राम और लक्ष्मण की, तुम्हारे सुग्रीव की और देशद्रोही विभीषण की बारी होगी। तुम शायद यह कहना चाहते हो कि स्त्री का वध करना अधर्म है। लेकिन याद रखो, शत्रु को दुख पहुंचाने के लिए कुछ भी किया जा सकता है।" और यह कहकर इंद्रजित ने रोती, विलाप करती सीता की गर्दन को अपनी तलवार से काटकर परे फेंक दिया और इसके साथ ही वह दुर्दांतरूप से सिंहनाद करने लगा। वह सिंहनाद इतना भयंकर था कि वानर सेना मारे डर के वहां से भाग खड़ी होने को हुई।

हनुमान के लिए यह स्थिति बड़ी विकट हो गयी। उसने अपने योद्धाओं को पुकारते हुए कहा, "तुम्हारे पराक्रम और तुम्हारी शूरवीरता को आज क्या काठ मार गया? तुम वीर हो। इस तरह युद्ध भूमि से भागोगे?"

हनुमान के इन शब्दों ने उन्हें बुरी तरह झिंझोड़ दिया। वे वहीं के वहीं खड़े हो गये और फिर वे पलटकर हनुमान के नेतृत्व में राक्षसों पर यमराज बनकर टूट पड़े।

हनुमान के हाथों में जो विशाल शिला थी, उसने उसे इंद्रजित के रथ पर दे मारा। लेकिन इंद्रजित का सारथी बहुत ही सतर्क

था । उसने अपनी सूझबूझ से शिला के प्रहार मे रथ को बचा लिया । रथ तो बच गया, लेकिन उस शिला के नीचे कई राक्षस दब गये और उनका वहीं अंत हो गया ।

इस तरह वानर वीर राक्षसों का बड़ी निर्ममता से वध करने लगे । वे इंद्रजित पर भी शिलाओं की वर्षा किये जा रहे थे । लेकिन इंद्रजित भी कम ताव में नहीं था । उसने भी अपने बाणों से कई वानर योद्धाओं का वध किया । इससे राक्षसों का उत्साह किसी-न-किसी तरह बना रहा ।

यह युद्ध बड़ा भयंकर था । हनुमान के सामने टिक पाना आसान नहीं था । राक्षस अनेक मरे जा रहे थे । होते-होते उनके पांव उखड़ने लगे, और वे युद्धभूमि से भागने लगे । पर हनुमान के स्वर में तो अब एकाएक निराशा आ गयी थी । उसने अपने साथियों को संबोधित करते हुए कहा, ''हमें इन राक्षसों से अब क्या लेना-देना । हम सीता के लिए यहां आये थे । उसकी हम रक्षा नहीं कर सके । हमें तो अब राम और सुग्रीव को यही बताना होगा कि इंद्रजित ने सीता की जान ले ली है । उनसे हमें जो भी आदेश मिलेगा, हम उसी के अनुसार आचरण करेंगे ।''

हनुमान को लौटते देख इंद्रजित निकुंभिलाचैत्य की ओर बढ़ा । वहां पहुंचकर वह फिर होम करने लगा । उसने अग्नि में रक्त और मांस की आहुति दी ।

इस बीच युद्धभूमि में कोलाहल अभी रुका नहीं था । राम समझ गये कि हनुमान ही अकेला सब कुछ झेल रहा है । इसीलिए उन्होंने जांबवान से कहा कि वह हनुमान को सहायता पहुंचाये ।

राम से आदेश पाकर जांबवान युद्धस्थल की ओर बढ़ा । उधर हनुमान ने जब देखा कि भल्लूक सेना उसकी सहायता के लिए उसी की ओर बढ़ी चली आ रही है, तो उसने उसे रोका और उसे वापस चलने के लिए कहा ।

वे सब अब राम के समक्ष उपस्थित हो गये । हनुमान बड़ा दु:खी दीख रहा था । उसने राम को सूचित किया कि इंद्रजित ने सीता का वध कर दिया है । यह सूचना पाते ही राम पर जैसे कि दु:ख का पहाड़
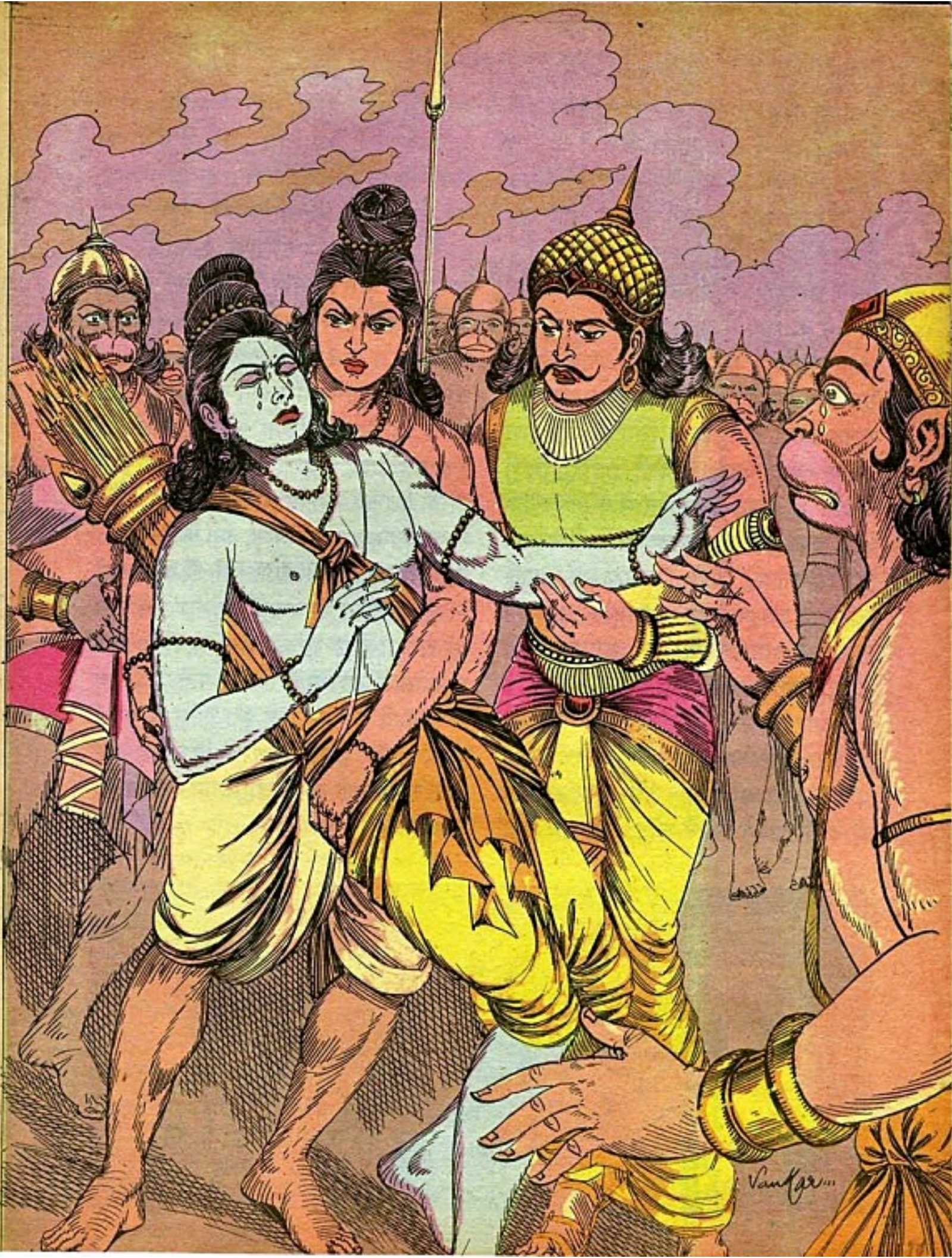
टूट पड़ा और वह एकदम बेहोश होकर वहीं पर गिर पड़े । अन्य वानर वीरों ने भी जब राम की दशा के बारे में सुना तो वे सब भी दौड़कर वहीं आ गये और उन्होंने राम के मुख पर सुगंधित जल के छींटे दिये । इससे राम होश में आ गये ।

राम को होश में आया देख लक्ष्मण ने उन्हें गले लगा लिया और बोला, "हे भ्राता, आपने धर्म मार्ग का अवलंबन लेकर पितृ-वाक्य का पालन किया है । इसके लिए आपने राज्य का भी त्याग किया । कैकेयी-दशरथ, किसी के प्रति भी आपने अपने मन में वैमनस्य नहीं आने दिया । इसके बावजूद सभी कष्ट आप ही को झेलने पड़ रहे हैं । आपका धर्म आपकी रक्षा नहीं कर पा रहा । लगता है यह धर्म निस्सार है । उधर अधर्म का अनुसरण करने वाला रावण पूरी तरह सुख भोग रहा है ।"

लक्ष्मण किसी-न-किसी तरह से राम को सांत्वना देना चाह रहा था । तभी वहां विभीषण भी आ गया । राम और लक्ष्मण को दुःखी पाकर उसने कहा, "हे राम, यह सूचना मुझे ठीक नहीं लगती । यह अविश्वसनीय है । जिस रावण ने सीता को किसी भी कीमत पर लौटाने से इनकार किया, वह उसके बध के लिए स्वीकृति कैसे देगा । इसमें कहीं-न-कहीं धोखा है । इंद्रजित इस समय फिर होम कर रहा है । वह यही चाहता था कि उसके होम-कार्य में वानर किसी प्रकार का विघ्न न डालें । इसलिए उसने आप सब को दुःख के सागर में डुबोने के लिए मायावी सीता का निर्माण किया और फिर उसका वध कर दिया । अगर वह बेरोकटोक होम करके युद्धक्षेत्र में लौट आता है तो सब देवता मिलकर भी उसका सामना नहीं कर सकेंगे । इसलिए यह होम समाप्त होने से पहले हमें निकुंभिलाचैत्य पहुंचना होगा और उस होम को रोकना होगा । किंतु राम, आपको हमारे साथ आने की आवश्यकता नहीं । केवल लक्ष्मण ही इस कार्य को पूरा करने में समर्थ होगा । वह उसके होम में विघ्न डालेगा और उससे युद्ध करके ब्रह्मा के वरदान को सत्य सिद्ध करेगा ।"

विचित्र अनुभव

वज्रनाभ नाम के गांव में उदयभानु नाम का एक व्यापारी रहता था। वह अभी युवा ही था कि उसके पिता का देहांत हो गया जिससे समूचे व्यापार का बोझ उसके कंधों पर आ पड़ा।

इस बीच उसके सामने एक समस्या आ खड़ी हुई। उधर तो उसकी बड़ी बहन की ननद की शादी थी और इधर उसकी पत्नी गर्भवती थी। व्यापार की परेशानियां अलग। इसलिए वह उस शादी में जाना नहीं चाहता था।

उदयभानु की पत्नी, भानुमति, ने अपने पति को समझाते हुए कहा, "देखिए, ससुर जी रहे नहीं। यदि आप भी शादी पर नहीं गये तो लोग क्या कहेंगे। बेहतर है कि आप शादी पर जायें।"

पत्नी के बार-बार कहने पर उदयभानु शादी पर जाने के लिए तैयार हो गया। एक किराये की गाड़ी में बैठकर निकल पड़ा। रास्ते में जंगल पार करना था।

ऐन दोपहर के वक्त गाड़ी जंगल के बीच पहुंची। तभी उस गाड़ी के चालक का कोई रिश्तेदार वहां दीख पड़ा। उसने गाड़ीवान को बताया कि उसकी मां का देहांत हो गया है और उसे फौरन घर पहुंचना चाहिए। साथ ही वह उदयभानु से बोला, "महोदय अगर यह वापस न गया तो इसकी मां की चिता को आग देने वाला कोई नहीं होगा। आप यहीं रुकिए। मैं दूसरी गाड़ी भिजवा दूंगा।"

फिर वे दोनों व्यक्ति गाड़ी पर बैठ गये और गाड़ी बड़ी तेज़ी से वापस मुड़ी।

उदयभानु लाचार था। वह वहीं एक बरगद के नीचे अपने हाथ के थैले को अपना तकिया बनाकर लेट गया और क्षणों में गहरी नींद सो गया। जब उसकी आंख खुली

शारदा अग्रवाल

तो उसने देखा कि चारों ओर अंधेरा फैल रहा है। जिस गाड़ी की वह राह देख रहा था, वह नहीं आयी। पर वह जल्दी-से-जल्दी जंगल पार कर जाना चाहता था। इसलिए वह काफी तेज़ी से चलने लगा। लेकिन इतने में बड़े जोरों की बारिश होने लगी।

"अजी रुकिए। इस बारिश में आप कितनी दूर जा पायेंगे। थोड़ी देर यहां इंतज़ार कर लीजिए।"

उदयभानु ने मुड़कर देखा। एक लंबे क़द का आदमी एक चबूतरे पर खड़ा था। पास ही एक मंदिर था।

यह व्यक्ति बार-बार कहे जा रहा था, "अजी, आप घबरायें नहीं। मैं कोई भूत-प्रेत नहीं हूं। मैं भी आपकी तरह एक राहगीर हूं जो इस बारिश में फंस गया।"

उदयभानु के मन में कुछ संदेह उठे, पर उन पर काबू पाकर वह आगे बढ़ गया। मंदिर के उस चबूतरे पर थोड़ी-सी ऐसी जगह थी जहाँ बारिश का पानी नहीं पड़ रहा था। उस व्यक्ति ने उसके लिए कुछ जगह साफ करते हुए कहा, "आइए बाबू जी, मेरा नाम चंद्रकिशोर है। मैं नौकरी की तलाश में इधर-उधर घूम रहा हूं। लगता है आप किसी अमीर घराने से हैं। आप यहां आकार बैठ जाइए। मैंने यह जगह आपके लिए साफ कर दी है।"

उदयभानु को उस व्यक्ति से जो सम्मान मिला था, उससे खुश हुआ और वहां बैठते हुए दर्प के साथ बोला, "मेरा नाम उदयभानु है। मैं वज्रनाभ में रहता हूं। वहां मुझे हर कोई जानता है, क्योंकि वहां मेरे बराबर का और कोई व्यापारी नहीं है।"

इस तरह एक दूसरे का परिचय पा लेने के बाद दोनों मौन हो गये। काफी देर तक उन दोनों के बीच कोई बातचीत नहीं हुई। उधर बारिश थी कि रुकने का नाम नहीं ले रही थी। उदयभानु का दिल काफी भारी होने लगा था।

आखिर चंद्रकिशोर बोला, "इस तरह बारिश से घिर जाना काफी विचित्र लगता है। क्या पहले भी आपके जीवन में ऐसा कोई विचित्र अनुभव हुआ है? यदि हुआ है तो बताइए।"

उस बरसात की रात में इस प्रकार मौन

बैठे रहना उदयभानु के लिए भी दूभर हो रहा था। इसलिए अपना गला साफ करके उसने कहना शुरू किया, "मेरे जीवन के लगभग तीस वर्ष बीत रहे हैं। लेकिन ऐसा विचित्र अनुभव आज तक नहीं हुआ। हां, एक घटना मेरे जीवन में घटी थी। वह मैं बताये देता हूं। वह घटना विचित्र है या नहीं, यह निर्णय आप को ही करना होगा।" फिर उदयभानु यूं सुनाने लगा।

उन दिनों उदयभानु शहर में पढ़ता था। तब राजेश कुमार नाम के एक युवक से उसे गहरी दोस्ती हो गयी थी। उदयभानु ने अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी थी और गांव में वापस आकर उसने अपने पिता का कारोबार संभाल लिया था। लेकिन इस बीच वह जब भी कभी शहर जाता, राजेश कुमार से ज़रूर भेंट करता।

एक बार जब उदयभानु शहर गया, तब हमेशा की तरह उसने राजेश कुमार से भेंट की। राजेश ने उदयभानु को बताया कि उसकी बहन की शादी के लिए कुछ रिश्ते देखे जा रहे हैं। उसने यह भी कहा, "मित्र, एक रिश्ता अच्छा है, लेकिन दहेज में वे दस हज़ार रुपये मांग रहे हैं और पिताजी के पास इत्तफ़ाक से एक पैसा तक नहीं रहा। मुझे गहरी चिंता सता रही है।"

राजेश कुमार को इस तरह उदास देखकर उदयभानु ने कहा, "चिंता क्यों करते हो? उस रकम की व्यवस्था मैं कर दूंगा। तुम जब लौटा सको, लौटा देना।"

इस तरह अपने मित्र को वचन देकर उदयभानु वापस अपने गांव आ गया और उसने सारी बात अपने पिता को बता दी।

उदयभानु की बात सुनते ही उसके पिता गुस्से में आ गये और बोले, "इस तरह पैसा बरबाद करने की मैं तुम्हें कतई इजाज़त नहीं दूंगा। तुम्हारा अगर यही हाल रहा तो बहुत जल्द हम दिवालिया हो जायेंगे।"

लेकिन उदयभानु अपनी बात पर अटल रहा। उसने अपने मित्र को दिया वचन निभाना चाहा। पुत्र का हठ देखकर पिता ने आखिर एक उपाय बताया।

"बीस साल पहले मैंने अपने मित्र रामधन को व्यापार शुरू करने के लिए पांच हज़ार रुपये कर्ज़ के रूप में दिये थे। व्याज के

साथ वह रकम अब चौगुनी हो गयी होगी, तुम उसके पास जाओ और उससे दस हज़ार रुपये वसूल करके अपने मित्र को दे दो। मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं होगी।" फिर उसने उसे अपने उस मित्र का पता दिया।

उदयभानु दो दिन की यात्रा करने के बाद अपने पिता के उस मित्र के गांव पहुंचा। तब तक दोपहर ढल चुकी थी। इधर-उधर पूछता हुआ जब वह रामधन के यहां पहुंचा तो वहां उसे कुछ लोग दिखाई दिये। उसने देखा कि घर के आंगन में रामधन का मृत शरीर पड़ा है और उसकी जवान बेटी रोती हुई पास बैठी है।

उदयभानु को देखकर गांव के लोगों को लगा कि शायद वह रामधन का कोई रिश्तेदार है। वे बोले, "बेटा, भगवान ने तुम्हें ठीक वक्त पर यहां भेजा। सूर्यास्त से पहले शव का दाह संस्कार हो जाना चाहिए।"

उदयभानु को यह समझते देर न लगी कि रामधन का अपना कहे जाने योग्य कोई नहीं है। एक समय वह उसके पिता का मित्र था। इसलिए उसने अपने पैसे खर्च करके रामधन का दाह-संस्कार पूरा किया।

दूसरे दिन रामधन की बेटी, भानुमति, ने हाथ जोड़कर उदयभानु का अभिवादन किया और कहा, "मैं नहीं जानती कि आप कौन हैं? मगर इस मुसीबत के वक्त आप यहां भगवान् बन कर आये और मेरी मदद की।" और यह कहते-कहते उसकी आंखों से बरबस आंसू झरने लगे।

रामधन ने गांव में जगह-जगह से कर्ज़ ले रखा था। उदयभानु ने अपने गले की सोने की ज़ंजीर और अंगूठियां बेचकर रामधन के सभी कर्ज़ चुका दिये। फिर वह भानुमति से बोला, "एक समय तुम्हारे पिताजी और मेरे पिताजी आपस में घनिष्ठ मित्र थे। अब तुम यहां अकेली कैसे रहोगी? अच्छा यही होगा कि तुम मेरे साथ हमारे गांव चलो।"

भानुमति उदयभानु के साथ चलने के लिए तैयार हो गयी। लेकिन उस गांव के लोगों ने इस पर आपत्ति की, और कहा कि जिस युवक के साथ उसका कोई रिश्ता नहीं, उसके साथ वह अकेली कैसे जा सकती है। यह

तो गांव के लिए अपमानजनक होगा ।

ऐसी हालत में उदयभानु के लिए कोई चारा न था, सिवाय इसके कि वह वहीं भानुमति से शादी कर लेता । शादी के लिए भानुमति एकदम तैयार हो गयी । उसी गांव के मंदिर में उदयभानु ने भानुमति के साथ विवाह कर लिया और फिर उसे लेकर वह अपने गांव को लौट आया ।

उदयभानु ने चंद्रकिशोर को यह घटना सुनाकर कहा, "गया तो था मैं वहां पुराना कर्ज़ वसूल करने, लेकिन वहां मुझे अपने ही किसी ऋण को चुकता करना पड़ा । क़िसी संपन्न घर में मैं शादी करता तो हज़ारों का दहेज आता । लेकिन मैं उस गरीब घर की असहाय लड़की के साथ विवाह-बंधन में बंध गया । यही मेरे जीवन की एक विचित्र घटना है । आप चाहें तो इसे मेरे जीवन का विचित्र अनुभव कह सकते हैं ।"

यह सब सुनकर चंद्रकिशोर ने कहा, "वाह खूब! किसी लोक कथा से यह कम रोचक नहीं है ।"

चंद्रकिशोर से प्रशंसा सुनकर उदयभानु को हलका संतोष हुआ । फिर उसने चंद्रकिशोर से कहा, "आप भी तो अपने जीवन की कोई विचित्र घटना सुनायें ।"

इस पर चंद्रकिशोर ने अपने स्वर में उदासी भरकर कहा, "मैं बेकार हूं । इसलिए निराश भी हूं । इससे बढ़कर मेरे जीवन का और कोई विचित्र अनुभव क्या हो सकता है । आप कृपा करके मेरे लिए किसी प्रकार की नौकरी की व्यवस्था कर दें । मैं आजीवन आपका आभार मानूंगा ।"

चंद्रकिशोर की इस मांग से उदयभानु परेशान हो गया । उसे कुछ सूझा नहीं । बोला, "अभी मेरे पास दस लोग नौकरी पर हैं । अगर मैं इसी तरह हर किसी को नौकरी पर रखता जाऊंगा तो मेरे घर में खाने तक को नहीं रहेगा । फिर मैं तो तुम्हें जानता तक नहीं । किसी को देखे-परखे बिना नौकरी कैसे दी जा सकती है?"

तभी उदयभानु को दूसरी तरहफ से एक गाड़ी आती दिखई दी । उसने उसे रोका और उसमें सवार होकर अपनी मंज़िल की ओर चला । तब तक सुबह हो गयी थी । उदयभानु शादी वाले घर ठीक समय पर

पहुंचा । शादी जैसे ही खत्म हुई, वह अपने गांव लौट आया । जैसे ही वह अपने घर पहुंचा, उसकी पत्नी ने दरवाजा खोला और उसे खुशी से भरकर बताया, "आपका दोस्त राजेश कुमार आया है । मैंने उसका उचित सत्कार किया और सोने के लिए उसे पश्चिमी दिशा वाला कमरा दिया है ।"

उदयभानु बड़े संतोष से उस कमरे की ओर बढ़ा । लेकिन उस कमरे में तो कोई नहीं था । खटिया पर एक पत्र पड़ा था जिसमें यह लिखा था–

'उदयभानु जी, मैं चंद्रकिशोर हूं, राजेश कुमार नहीं । आपने मेरी ईमानदारी के प्रति संदेह प्रकट किया और मुझे नौकरी देने से इनकार कर दिया । मैंने जंगल में आप से जो कहानी सुनी थी, उसी के आधार पर मैंने आपकी पत्नी को यह विश्वास दिला दिया कि मैं ही राजेश कुमार हूं । इस पर आपकी पत्नी ने मेरा अतिथि-सत्कार किया । मैं आपकी तिजोरी से सिर्फ दस हज़ार रुपये ही बतौरे कर्ज़ ले रहा हूं । मैंने आपके घर में खाना खाया है । मैं आपको धोखा नहीं दूंगा । मैं इस राशि से व्यापार शुरू करूंगा और दो वर्षों में आपका यह ऋण चुकता कर दूंगा । परसों जब आपने मुझसे पूछा, तब तक मेरे जीवन का कोई विचित्र अनुभव नहीं रहा था । अब इसे ही मेरे जीवन का विचित्र अनुभव समझिए ।'

भानुमति अपने पति को चुपचाप खड़ी देख रही थी । उदयभानु जब पत्र पढ़ चुका तो उसने कहा, "आपका मित्र कुछ बताये बिना ही चला गया । पत्र में क्या लिखा है उसने?"

"कुछ नहीं, केवल मेरी बुद्धि पर प्रश्नचिह्न लगाया है और साथ ही यह बता दिया है कि ईमानदारी का अर्थ क्या होता है । जो भी हो, वह ईमानदार निकला । इसलिए ब्याज-समेत वह कर्ज़ चुकाकर ही रहेगा ।"

यह कहकर उदयभानु ने वह पत्र तिजोरी में रख दिया और तिजोरी पर ताला लगा दिया ।

ज़बान की कीमत

पुराने वक्तों की बात है । तुर्की में अब्दुल हमीद नाम का एक व्यापारी रहता था । उसके पास बहुत ही उम्दा नस्ल का एक अरबी घोड़ा था । हमीद बूढ़ा हो चुका था । उसने अब इस घोड़े को तीन सौ दीनारों के लिए बेचने की कोशिश की । लेकिन इतनी रकम-देने को कोई तैयार न ।

एक दिन अज़ीज़ नाम का एक नौजवान उसके यहां आया और बोला, "जनाब, मेरी पैदाइश एक ऊंचे खानदान में हुई है । पर फिलहाल मैं कंगाल हूं । मुझे आपका घोड़ा बहुत पसंद है, लेकिन मैं इस वक्त इसकी कीमत अदा नहीं कर सकता । आप अगर यह घोड़ा मुझे दे दें तो मैं इसके सहारे बाहर के देशों में जाना चाहूंगा और वहां से कुछ कमाई करके लाऊंगा । एक सल में मैं जो भी कमाई करूंगा वह आपकी होगी । मैं एक साल के पूरा होते-होते वापस आ जाऊंगा । मैं इस वादे से मुकरूंगा नहीं ।"

हमीद कुछ देर तक सोचता रहा । फिर घोड़ा उसे सौंपते हुए बोला, "मुझे तुम्हारी शर्त मंजूर है । तुम इसे ले जा सकते हो ।"

घोड़ा पाकर अज़ीज़ को बड़ा संतोष हुआ । वह उछलकर उस पर जा बैठा और कुछ दिन और कुछ रातें सफर करके वह एक शहर में पहुंचा ।

शहर में वह राजमहल के सामने से गुज़रने लगा । महल में से नवाब की नज़र उसके घोड़े पर पड़ी । नवाब ने सोचा कि काश, वह घोड़ा मेरे पास होता ।

अज़ीज़ एक सराय में रुका था । नवाब ने अपने आदमियों को वहां भेजकर उसे अपने यहां बुलवाया और पूछा कि वह घोड़े को किस कीमत पर बेचना चाहेगा ।

अज़ीज़ नहीं चाहता था कि वह उस घोड़े को बेचे । लेकिन फिर उसने सोचा कि अगर

तुर्की लोककथा

घोड़ा बेचने की नौबत आ भी जाती है तो क्यों न ज़्यादा से ज़्यादा कीमत वसूल की जाये ताकि हमीद को भी मोटी रकम दी जा सके । इसलिए उसने कहा, "हुज़ूर, इस लासानी घोडे की कीमत नौ सौ दीनार है ।"

नवाब को यह कीमत बहुत ज़्यादा लगी, लेकिन वह उस नायाब चीज को अपने हाथ से जाने देना भी नहीं चाहता था । इसलिए उसने अज़ीज़ से कहा, "तुम इसकी कीमत बहुत ज़्यादा बता रहे हो । मुझे सोचने का वक्त दो । कल सुबह आओ, तब हम इसकी कीमत तय करेंगे ।" यह कहकर नवाब ने अज़ीज़ को वापस भेज दिया । फिर उसने अपने वज़ीरों को बुलवाया और उनसे जानना चाहा कि इस घोड़े की कीमत कैसे कम करवायी जाये ।

सब वज़ीरों ने अपने-अपने ढंग से उपाय बताये, लेकिन नवाब को एक भी उपाय पसंद नहीं आया । इस पर बड़े वज़ीर ने नवाब से कहा, "आप नाहक परेशान हो रहे हैं । कल जब वह नौजवान यहां आयेगा, तब आप शहज़ादी को भी बुलवा लीजिएगा, और तब सौदा कीजिएगा । शहज़ादी के कहने पर देखें वह कीमत कैसे कम नहीं करता । अगर उसने कीमत कम न भी की,तो भी कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा । वह हम से बचकर इस शहर को छोड.नहीं सकता ।"

बड़े वज़ीर की सलाह नवाब को पसंद आयी । दूसरे दिन उसने अपने खादिमों से कहा कि वे अज़ीज़ को फुलवारी में लिवा ले आयें । लेकिन फुलवारी में पहले खुद पहुंचने की बजाय उसने शहज़ादी को वहां भेजा ताकि वह अज़ीज़ से बात का सिलसिला शुरू करे ।

अज़ीज़ जब अपने घोड़े पर सवार होकर फुलवारी में पहुंचा तो उसे वहां संगमरमर के एक चबूतरे पर शहज़ादी बैठी दिखाई दी । वह अकेली थी । उसकी खूबसूरती ने अज़ीज़ को बांध लिया और उसका दिल धक-धक करने लगा । शहज़ादी को भी अज़ीज़ बेहद खूबसूरत लगा । पहली ही नज़र में वह उस नौजवान की तरफ खिंचने लगी । उसे लगा कि उस खूबसूरत घोड़े की सवारी करने का हक सिर्फ उसी नौजवान को है, उसके पिता को नहीं ।

वह अज़ीज़ के नज़दीक आयी, और घोड़े

को देखने-परखने के अंदाज़ में थोड़ी देर तक वहां चहल-कदमी करती रही। फिर वह आहिस्ता से अज़ीज़ से बोली, "ऐ, नौजवान, अगर तुम यह घोड़ा सस्ते में नहीं बेचोगे तो तुम्हारे सर पर बला टूट पड़ेगी। इसलिए अकलमंदी इसी में है कि तुम किसी तरह बचकर यहां से निकल जाओ। मेरे पास एक लंबा चोगा है जिसके अंदरूनी हिस्से में कई दीनार सिले हैं। जैसे ही मेरे वालिद यहां आयें, तुम उनसे कहना कि तुम्हारा गला प्यास से सूखा जा रहा है। मैं पानी लाने के बहाने महल में जाऊंगी और वह चोगा पहनकर लौट आऊंगी। इसके बाद हम दोनों घोड़े पर बैठकर भाग चलेंगे।"

इतने में नवाब वहां आया। अज़ीज़ ने कहा कि वह प्यास के मारे बेहाल हुआ जा रहा है। अज़ीज़ की बात सुनकर शहज़ादी पानी लाने के बहाने फौरन महल के अंदर गयी और दीनारों वाला चोगा पहनकर पानी के बर्तन के साथ लौट आयी। शहज़ादी से पानी लेने के बहाने अज़ीज़ ने उसका हाथ पकड़ा और उसे खींचकर घोड़े पर बैठा दिया। फिर बिजली की फुर्ती से वह खुद भी घोड़े पर जा बैठा और घोड़े को एड़ देकर आंख झपकते ही वहां से गायब हो गया।

नवाब को असलियत समझते देर न लगी। उसने कुछ घुड़सवार सिपाहियों को अज़ीज़ के पीछे भेजा, लेकिन अज़ीज़ का घोड़ा तो हवा से बातें करने वालों में था। इसलिए उसका कहीं पता ही न चला। अज़ीज़ ने उस शहज़ादी के साथ कई मुल्क घूम-घूम कर देखे। उनका वक्त यूं ही गुज़रा
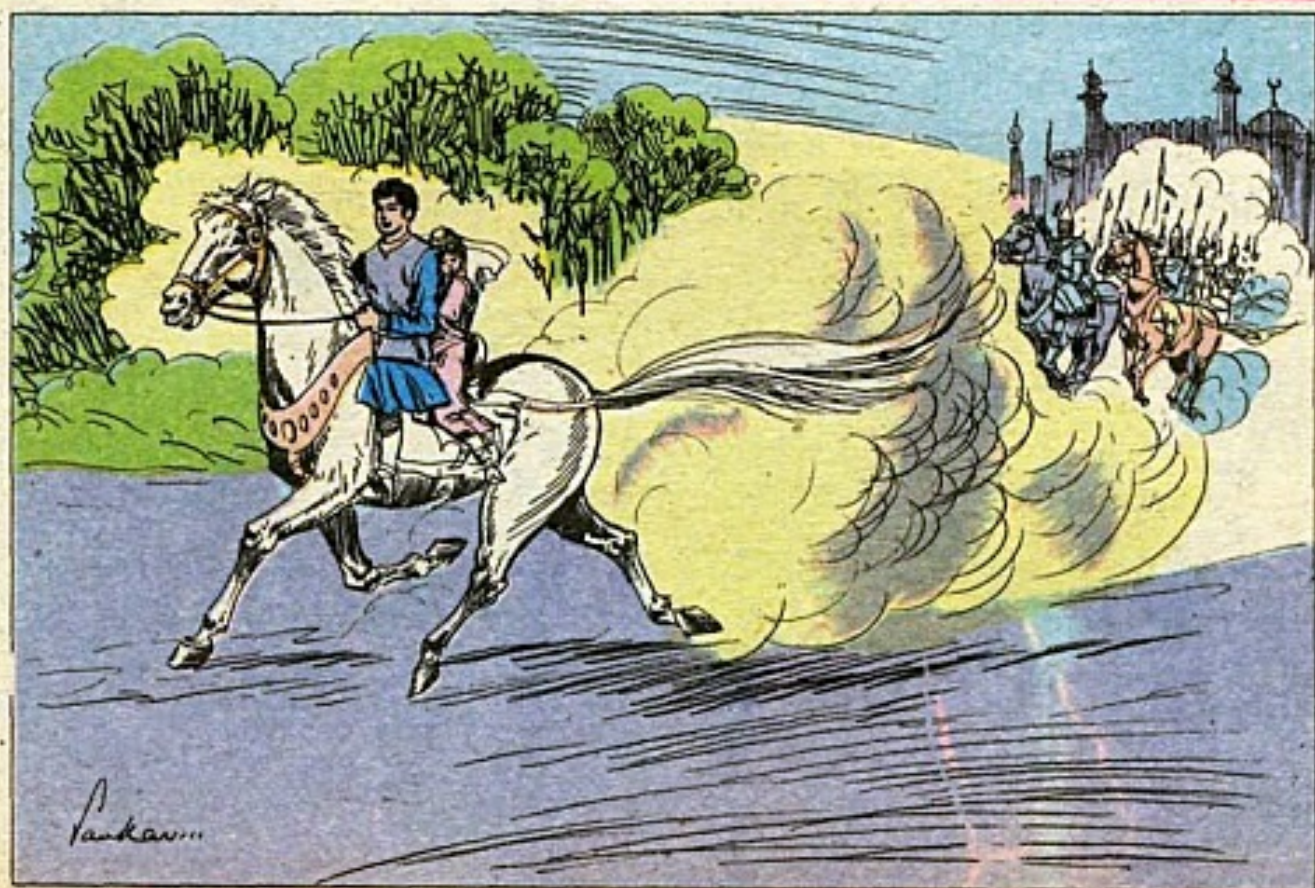
जा रहा था । आख़िर, अज़ीज़ को लगा कि अब उसके लौटने का वक्त आ गया है ।

अपने वादे को याद करके अज़ीज़ अब कुछ परेशान-सा दिखाई देने लगा था । उसके उस परेशान चेहरे को देखकर एक दिन शहज़ादी ने उससे पूछ ही लिया, "आखिर, बात क्या है?" तब अज़ीज़ ने अब्दुल हमीद को दिये अपने कौल के बारे में शहज़ादी को बताया और उससे बोला, "उसी के इस घोड़े की वजह से मैंने तुम्हें हासिल किया । अपने वादे के मुताबिक मुझे तुम्हें हमीद के हाथों सौंप देना चाहिए, और साथ में तुम्हारे इस दीनार के चोगे को भी । लेकिन अब लगता है कि मैं तुम्हारे बिना जी नहीं सकता ।"

अज़ीज़ की बातें सुनकर शहज़ादी चौंकी और बोली, "तुमने मेरे दिल को जीत लिया था । इसी लिए मैं अपने लोगों को छोड़कर अपनी मर्ज़ी से तुम्हारे साथ चली आयी । अब तक जो कुछ बीता उसके बारे में हमीद कुछ नहीं जानता । उसे घोड़े की कीमत ही चाहिए न । तुम उसे एक हज़ार दीनार दे दो ।"

लेकिन अज़ीज़ अपने वादे से मुकरने के लिए तैयार नहीं हुआ । वह जैसे ही अपने नगर में पहुंचा, सीधा हमीद के पास गया और उससे बोला, "आप के घोड़े की वजह से मैंने इस शहज़ादी और दीनारों वाले इस चोगे को हासिल किया है । आप इन्हें कबूल फ़रमायें ।"

अज़ीज़ की ईमानदारी पर हमीद दंग रह गया । वह उससे बोला, "दोस्त, मैं तुम्हारे कौल पूरा करने पर बहुत खुश हूं । शहज़ादी को तुमने हक़ीक़त में अपनी निजी ख़ासियत की वजह से जीता । इसे इसलिए अपनी बीवी बना लो । अलबत्ता, दीनार हम आपस में बंटे लेते हैं । और यह घोड़ा अब हमेशा के लिए तुम्हारे पास ही रहेगा ।"

अज़ीज़ और शहज़ादी हमीद की नेकनीयती पर बहुत खुश हुए । हमीद ने उनका निकाह भी खुद करवाया और उन्हें दुआ देकर रुख़सत किया ।

प्रकृति : रूप अनेक

एक नहीं, अनेक

एक बहुत ही छोटा पक्षी है "जन्नी रन" जिसे आम तौर पर "स्कट्टी" और "जग्गी" नाम से पुकारा जाता है। इसका लेटिन नाम काफी लंबा है-ट्रोग्लोडाइट्स ट्रोग्लोडाइट्स। वास्तव में, देखने में यह पक्षी बहुत छोटा है, लेकिन इसका साहस ग़ज़ब का है। यह अपने से काफी बड़े पक्षी पर भी आक्रमण कर देता है। नर जन्नी घोंसले बनाने में विशेष रुचि रखता है, और वह एक नहीं, अनेक घोंसले एक साथ बना डालता है। अब यह मादा जन्नी पर निर्भर करता है कि वह कौन-सा घोंसला अंडे देने के लिए चुनती है।

कीट-ऊर्जा

एक साधरण पिस्सू सैकंड के एक अंश में कई-सौ बार अपनी लंबाई के बराबर आगे और पीछे छलांगे लगाता है। एक चींटी की उम्र १६ वर्ष तक हो सकती है। चींटियां अपनी बाबियों में तरह-तरह के कीटों को अपना "मेहमान" बनाकर रखती हैं ताकि उनके शरीर से निकलने वाले मधु का वे पान कर सकें। आक्रमणकारियों से उन्हें सुरक्षित रखने के लिए वे सैनिकों की नियुक्ति करती हैं। दीमक की बांबी आम तौर पर ऊंची होती है। कई बार इसकी ऊंचाई १५ से २० फुट तक भी जा पहुंचती है। इसकी तुलना मिस्र के पिरामिडों से की जा सकती है जो मानव-निर्मित है।

सबसे बड़ा चमगादड़

चमगादड़ ही वह अकेला स्तनपायी प्राणी है जो उड़ सकता है। चमगादडों में सबसे बड़े चमगादड़ों को "कलांग" नाम से पुकारा जाता है। ऐसे चमगादड़ इंडोनेशिया और मलेशिया में पाये जाते हैं। इनके फैले हुए पंखों की लंबाई लगभग छः फुट होती है।

Don't you owe the
See my tail It's out of a Fairy Tale
Nice 'n' funny I'm a Bunny
Foxy is my name But I'm oh-so tame
Your Bear Hugs are warmer than mine
Tonight
Tomorr

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां दिसम्बर, १९९२ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

M. Natarajan

M. Natarajan

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★ १० अक्तूबर'९२ तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००-/ का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियां केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें : **चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६**

अगस्त १९९२ की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **अगर हाथीहै गजराज**

दूसरा फोटो : **तो भैया मेरा है युवराज!**

प्रेषिका : भरतराज पुरोहित, नया बाजार, नीमच कैंट-४५८४४१

पुरस्कार की राशि रु. १००/- इस महीने के अंत में भेजी जाएगी ।

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

CHANDAMAMA
(Hindi)

October 1992
Regd. No. M. 5452